

विश्वविद्यालय की उपलब्धियाँ

(वर्ष 2016-2020)



कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

© 2021 कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर
प्रकाशन सं. कृ.वि.जो / 2021 / 01

संपादन :

डॉ. सीताराम कुम्हार

निदेशक शिक्षा, संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर

डॉ. ईश्वरसिंह

निदेशक अनुसन्धान, प्रसार शिक्षा एवं पी.एम.ई., कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

संकलन :

शिक्षा

डॉ. दमा राम

सहायक आचार्य (पादप रोग विज्ञान), कृषि महाविद्यालय, जोधपुर

डॉ. कृष्णा सहारन

सहायक आचार्य (सुक्ष्मजीव विज्ञान), कृषि महाविद्यालय, जोधपुर

अनुसंधान

डॉ. मूला राम

सहायक आचार्य (सस्य विज्ञान), कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर

डॉ. एम. एल. मेहरिया

सहायक आचार्य (सस्य विज्ञान), कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर

प्रसार शिक्षा

डॉ. महेन्द्र कुमार

सह आचार्य (प्रसार शिक्षा), प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

प्रकाशक :

शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर



प्रो. बी.आर. चौधरी
कुलपति

फोन : 0291-2570711
फैक्स : 0291-2570710
ई-मेल : vcunivag@gmail.com
वेब साईट : www.aujodhpur.ac.in

सन्देश

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की स्थापना वर्ष 2013 मे हुई। यह विश्वविद्यालय कृषि शिक्षा, शोध एवं प्रसार के उद्देश्यों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्थापित करने के लिये प्रयासरत है। कृषि शिक्षा खेती से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित करके उसके प्रतिरोपण का मुख्य साधन है। विश्वविद्यालय के सेवा क्षेत्र में राजस्थान के ४: जिले जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली, जालोर एवं सिरोही शामिल हैं जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का लगभग २८ प्रतिशत भाग है। जिसमें राज्य की २१.१ प्रतिशत मानव तथा २९.३ प्रतिशत पशु आबादी आती है। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अन्तर्गत चार कृषि महाविद्यालय दो संकाय (डेयरी प्रौद्योगिकी एवं कृषि अभियान्त्रिकी) दो कृषि अनुसंधान केन्द्र, तीन कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र व ४ के नाम से संचालित हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के अंगीकृत महाविद्यालयों द्वारा विगत पांच वर्षों में ४१२ विद्यार्थीयों ने स्नातक व ३७ विद्यार्थीयों ने स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त की। इनमें से १०५ से ज्यादा विद्यार्थीयों ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा के माध्यम से देश के नामी विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश लिया है।

कृषि अनुसंधानों द्वारा विभिन्न फसलों की उत्पादकता बढ़ाने, लागत घटाने, जल एवं मूदा जैसे प्राकृतिक संसाधनों का न्यायोचित उपयोग करते हुए इस क्षेत्र के समग्र कृषि विकास हेतु कृषि शोध कार्य किये जा रहे हैं। कृषि अनुसंधान केन्द्र, मंडोर, जोधपुर द्वारा तिल की आर.टी. ४६, आर.टी. ५४, आर.टी. १०३, आर.टी. १२५, आर.टी. १२७, आर.टी. ३४६, आर.टी. ३५१, आर.टी. ३७२, मिर्च की आर.सी.एच. १, अरण्डी की आर.एच.सी. १, राजगीरा की आर.एम.ए. ४, आर.एम.ए. ७, ईसबगोल की आर.आई. १, तुम्बे की आर.एम.टी. ५९, ग्वार की आर.जी.एम. ११२, मोठ की आर.एम.ओ. ४० इत्यादि किस्में विकसित गई हैं। बाजरा परियोजना के अंतर्गत बाजरा की एम.पी.एम.एच. १७ एवं एम.पी.एम.एच. २१ संकर किस्में विकसित की, जो कि किसानों द्वारा पसंद की गई है। विश्वविद्यालय में नई फसलें विद्या, किनोवा, चिकोरी व केमोराइल आदि पर अनुसंधान कार्य चल रहा है। विश्वविद्यालय ने इक्रीसेट, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, किकहाउस ट्रस्ट, बायोवर्सिटी इंटरनेशनल जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ विभिन्न विषयों पर सहयोगात्मक रीति से शोध कार्यों हेतु एम.ओ.यू. किये हैं। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर बाजरे की लोकप्रिय संकर एम.पी.एम.एच. १७ का अपने स्तर पर बीज उत्पादन कर रहा है, साथ ही इसके बीज की पर्याप्त आपूर्ति के लिये विश्वविद्यालय ने आठ निजी कम्पनियों के साथ एम.ओ.यू. भी किया है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों व सीमित संसाधनों के बावजूद, यह क्षेत्र कई मसालों, दहलनों व तिलहनी फसलों में अग्रणी है।

विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत प्रसार शिक्षा निदेशालय के माध्यम से ६ कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा विगत पांच वर्षों में १४४३ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिससे कुल ४५७६८ किसान, कृषक महिलाएं व प्रसार कार्यकर्ता लाभान्वित हुए। विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल ८५९५ समूह अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन भी लगाये गए।

समन्वित दृष्टिकोण से इस क्षेत्र में कृषि शिक्षा, कृषि अनुसंधान व कृषि विस्तार के माध्यम से इस क्षेत्र के किसानों की आय बढ़ाने में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगी। विगत ५ वर्षों में विश्वविद्यालय की मुख्य उपलब्धियों की संक्षिप्त विवरणी इस प्रतिवेदन में समावेशित की गई है। मुझे विश्वास है कि हमारे विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य इसी प्रकार से कृषि शिक्षा, कृषि शोध एवं कृषि विस्तार कार्यों को श्रेष्ठता का उच्चतम आयाम प्रदान करने के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ सहयोग देते रहेंगे। मैं इस प्रकाशन के संकलन-कर्ताओं की सराहना करता हूँ एवं उनको धन्यवाद देता हूँ।

बी.आर. चौधरी



कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

उपलब्धियाँ (2016–2020)



कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की स्थापना वर्ष 2013 में अधिनियम 21 के तहत 14 सितम्बर 2013 को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के छ: जिलों में कृषि शिक्षा, कृषि अनुसंधान व कृषि विस्तार के माध्यम से इस क्षेत्र के समग्र विकास के उद्देश्य से की गई। राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 342 लाख हैक्टेयर में से 97 लाख हैक्टर (28 प्रतिशत) इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आता है। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में छ: जिले, जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली, जालोर एवं सिरोही शामिल हैं, जिसमें राज्य की 21.1 प्रतिशत मानव तथा 29.3 प्रतिशत पशु आबादी निर्वाह करती है।



कुलपति

- कुलसचिव, सचिव प्रबन्ध मण्डल
- वित्त नियंत्रक, सचिव वित्त समिति
- भू-सम्पदा अधिकारी
- निदेशक
 - अनुसंधान
 - प्रसार शिक्षा
 - प्राथमिक, निगरानी एवं मूल्यांकन
 - मानव संसाधन विकास
 - शिक्षा
 - छात्र कल्याण
- परीक्षा नियंत्रक
- अधिष्ठाता
- कृषि महाविद्यालय, जोधपुर
- कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर, पाली
- कृषि महाविद्यालय, नागौर
- कृषि महाविद्यालय, बायतु, बाड़मेर
- डेयरी प्रौद्योगिकी संकाय, जोधपुर
- कृषि अभियांत्रिकी संकाय, जोधपुर



शिक्षा

- कृषि महाविद्यालय (4)
- संकाय (2)
- कृषि डिप्लोमा संस्थान (1)
- कृषि अनुसंधान केन्द्र (2)
- कृषि अनुसंधान उप केन्द्र (3)
- कृषि विज्ञान केन्द्र (6)
- मंडोर, जोधपुर, स्थापना 2012
- सुमेरपुर, पाली, स्थापना 2012
- नागौर, स्थापना 2015
- बायतु, स्थापना 2021
- कृषि अभियांत्रिकी, स्थापना 2020
- डेयरी प्रौद्योगिकी, स्थापना 2020
- लाडनू, नागौर, स्थापना 2013
- मंडोर, जोधपुर, स्थापना 1983
- केशवाना, जालौर, स्थापना 1989
- सुमेरपुर, पाली, स्थापना 1972
- समदड़ी, बाड़मेर, स्थापना 1995
- नागौर, स्थापना 1993
- केशवाना, जालौर, स्थापना 1985
- सिरोही, स्थापना 1989
- अठियासन, नागौर, स्थापना 1992
- फलौदी, जोधपुर, स्थापना 2012
- मौलासर, नागौर, स्थापना 2012
- गुडामालानी, बाड़मेर, स्थापना 2012



वित्तीय लेखा : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधीन अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा से सम्बन्धित ईकाइयों के लिये 2016 – 2020 तक परियोजनानुसार एवं संस्थावार निम्नानुसार बजट प्राप्त हुआ।

बजट मद	बजट (₹ लाख में)					कुल योग
	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21	
गैर राज्य आयोजना	259.09	480.00	510.00	455.00	565.00	2269.09
राज्य आयोजना	1656.27	1900.66	2304.53	2250.00	2400.00	10511.46
RKVK	544.00	646.68	550.00	856.00	267.00	2863.68
AICRP	70.17	166.17	171.17	98.77	132.84	639.12
PC Unit (बाजरा)	204.71	289.63	409.16	116.34	238.77	1258.61
कृषि विज्ञान केन्द्र	392.81	640.39	521.88	567.69	450.13	2572.90
NAHEP	—	—	279.12	193.90	19.50	492.52
MIDH	26.60	20.65	13.10	19.60	21.15	101.10
अन्य परियोजनाएँ	25.50	27.00	33.00	47.50	26.50	159.50
कुल योग	3179.15	4171.18	4791.96	4604.80	4120.89	20867.98





शिक्षा

वर्ष 2016–17 से 2020–21 तक में विश्वविद्यालय के स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम में कुल 1362 छात्र/छात्राओं ने नामांकन कराया।

महाविद्यालयों में स्नातक पाठ्यक्रम हेतु नामांकित छात्र/छात्राओं की विवरण :

विवरण	वर्षवार छात्रों की संख्या					योग
	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	
कृषि महाविद्यालय, जोधपुर						
स्वीकृत	50	50	50	60	60	270
नामांकित	49	49	50	60	59	267
कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर						
स्वीकृत	50	50	50	61	60	271
नामांकित	46	50	50	59	59	264
कृषि महाविद्यालय, नागौर						
स्वीकृत	50	50	50	60	60	270
नामांकित	48	44	50	60	60	262

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. पाठ्यक्रम में नामांकित छात्र/छात्राओं की विवरण :

विवरण	वर्षवार छात्रों की संख्या					योग
	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	
स्नातकोत्तर						
स्वीकृत	12	12	16	24	24	88
नामांकित	11	11	15	24	24	85
पीएच.डी.						
स्वीकृत	—	—	4	6	6	14
नामांकित	—	—	4	6	6	14

वर्षवार उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का विवरण :

महाविद्यालय	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	योग
स्नातक पाठ्यक्रम					
जोधपुर	35	45	50	54	184
सुमेरपुर	34	40	43	45	162
नागौर	—	—	33	48	81
योग	69	85	126	147	427
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम					
जोधपुर	—	11	11	15	37



छात्रवृत्ति विवरण

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के सभी संघटक महाविद्यालयों में छात्र-छात्राओं को अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति की सुविधा दी जा रही है।

छात्रवृत्ति से लाभांवित विद्यार्थियों का विवरण :-

छात्रवृत्ति विवरण	जोधपुर	सुमेरपुर	नागौर
2016–17	84	—	—
2017–18	126	99	—
2018–19	126	55	52
2019–20	108	81	27
2020–21	157	90	27

दीक्षांत समारोह

विश्वविद्यालय में विगत पाँच वर्षों में कुल दो दीक्षांत समारोह आयोजित किये गये जिसमें 449 छात्र-छात्राओं को उपाधि तथा 13 छात्र-छात्राओं को उपाधि के साथ गोल्ड मेडल प्रदान किये गये।

दीक्षांत समारोह दिनांक	उपाधि प्राप्तकर्ता छात्र की संख्या		गोल्ड मेडल प्राप्तकर्ता छात्र की संख्या	
	स्नातक	स्नातकोत्तर	स्नातक	स्नातकोत्तर
04.08.2019	154	11	2	3
18.01.2021	258	26	2	6

विगत पाँच वर्षों में विश्वविद्यालय के अंगीभूत महाविद्यालयों से उत्तीर्ण 105 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा के माध्यम से देश के नामी विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया।





विद्यार्थी READY प्रोग्राम

कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव हेतु STUDENT READY कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कृषि विश्वविद्यालय के सभी संगठक महाविद्यालयों में चतुर्थ वर्ष के प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए आईसीएआर की पंचम अधिष्ठाता समिति के सुझावों के आधार पर यह कार्यक्रम करवाया जा रहा है, जिसमें निम्न गतिविधिया की जा रही है:-

- महाविद्यालयों के सभी चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों को अलग—अलग कृषि विज्ञान केंद्र (फलोदी, बाड़मेर, नागौर, मौलासर, जालोर, पाली व सिरोही) में भेजकर कृषि कार्य अनुभव कराया जाता है। इस दौरान विद्यार्थी किसानों के प्राकृतिक परिवेश का अध्ययन कर उसकी समस्याओं को पहचानते हैं एवं पुस्तकीय ज्ञान को वास्तविक कृषि कार्यों में अपनाते हैं।
- सभी विद्यार्थियों को कृषि कार्य अनुभव प्राप्त करने के बाद राज्य के प्रतिष्ठित कृषि आधारित संगठनों का प्रशिक्षण दिया जाता है एवं विभिन्न उत्पाद कंपनियों में कार्य प्रशिक्षण कराया जाता है।
- विद्यार्थियों द्वारा पांच ELP योजनाओं के अंतर्गत मुर्गी पालन, मशरूम उत्पादन, जैविक कृषि उत्पादन एवं वाणिज्य नर्सरी प्रबंधन में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों को योजना बनाना एवं उसके स्वयं के द्वारा चलाना भी सिखाया जाता है।



कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव का उन्मुखीकरण कार्यक्रम

कृषि स्नातक चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों के लिए कृषि महाविद्यालय जोधपुर में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (आर ए डब्ल्यू ई) का सात दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रो बी.आर. चौधरी, माननीय कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने इस कार्यक्रम को कृषि के छात्रों के लिए बेहद जरूरी बताया है क्योंकि इसके अन्तर्गत सभी छात्र किसानों के साथ रहकर जो भी सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम में पढ़ा है उसका प्रायोगिक महत्व जान सकेंगे।





पुस्तकालय

कृषि शिक्षा में सूचना संचार क्रांति की महता को दृष्टीगत रखते हुए विश्वविद्यालय पुस्तकालय का CodeAchi Library Management System द्वारा Digitalization किया गया है। पुस्तकालय द्वारा छात्र-छात्राओं को e-access, Reference, Books New Paper एवं Magazine इत्यादि की सुविधायें प्रदान की जा रही है। उक्त के अन्तर्गत लगभग 6200 पुस्तिकाय एवं 185 e-books (NIPARS, ASTRAL & Scientific) G-c Journals, 15 Magazine की सुविधाएं दी जा रही है। विश्वविद्यालय सहित विभिन्न महाविद्यालयों के पुस्तकालय द्वारा गुणवत्ता युक्त शोध हेतु Drill bit Anti Plagiarism Software उपलब्ध कराया गया है।

कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर की लाइब्रेरी में वर्तमान में 4095 पुस्तके उपलब्ध हैं जिसका लेन देन पूर्णतया contact less एवं विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध करवाए गए CodeAchi Library Management System द्वारा किया जा रहा है। सभी पुस्तकों का नामांकन बारकोड के माध्यम से किया गया है साथ ही प्रत्येक विद्यार्थी को RF ID कार्ड दिया गया है जिसके माध्यम से लाइब्रेरी में प्रवेश एवं पुस्तकों का लेनदेन किया जाता है। पुस्तकों की स्थिति जानने एवं विद्यार्थियों की सुगमता हेतु एक कियोस्क की सुविधा भी प्रदान की गई है। इसमें छात्रों को इंटरनेट की सुविधा भी दी गयी है। विद्यार्थियों के लिए प्रतिवर्ष पुस्तक मेले का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त लाइब्रेरी में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु उपयोगी पुस्तकों का संग्रह किया गया है।



विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों का टिड्डी ग्रसित क्षेत्रों का दौरा

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति डॉ बी आर चौधरी व महाविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम ने भांडु गांव में टिड्डी दल प्रभावित इलाके का दौरा करके फसलों के नुकसान व स्थिति का अवलोकन किया। टीम ने टिड्डी रोकथाम संगठन, भारत सरकार के अधिकारियों तथा राजस्थान कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर टिड्डी नियंत्रण के प्रभावी उपाय सुझाए।



अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कल्याण के लिए एस.सी.-एस.पी. परियोजना



भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा वित पोषित परियोजना के तहत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कल्याण के लिए कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह परियोजना अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा स्वीकृत है, जिसमें स्वीकृत राशि का परियोजना में विदेशी मानकों एवं घटकों को ध्यान में रखते हुए अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षाओं में भाग लेने के लिए निपुण करना है।



मरुधरा—2020 सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्पर्धा का आयोजन

मरुधरा—2020 के शुभारंभ में कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के सभागार में दो दिवसीय अन्तर कृषि महाविद्यालय सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्पर्धा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्रीमति प्रीति चन्द्रा (आई. पी. एस.) डीसीपी (पश्चिम), जोधपुर पुलिस कमिसनरेट रही।

इस कार्यक्रम में कृषि महाविद्यालयों, जोधपुर, सुमेरपुर व नागौर से कुल 91 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें से 48 छात्राएं एवं 43 छात्र हैं। इस प्रतियोगिता जिसमें समुह नृत्य, एकल नृत्य, शास्त्रीय नृत्य, देशभक्ति गीत, एकांकी नाटक, प्रहसन नक्काली एकल अभिनय एवं प्रश्नोत्तरी, अविचारित भाषण वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं इसके द्वारा विश्वविद्यालय स्तर की टीम के लिए विद्यार्थियों का चयन किया गया।



मरुधरा—2020 सांस्कृतिक एवं साहित्यिक स्पर्धा का आयोजन

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के तहत स्वच्छता अभियान

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के द्वारा अन्त्योदय ग्राम योजना के तहत चयनित ग्राम लूणी में 04.02.2020 को कृषि महाविद्यालय मंडोर के द्वारा आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में भाग ले रहे लगभग 50 कृषि विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों द्वारा सफाई अभियान के द्वारा जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत ग्राम लूणी के उच्च माध्यमिक विद्यालय व राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय के आस-पास के क्षेत्रों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लूणी के आस-पास के क्षेत्रों में सफाई का कार्य सम्पन्न किया गया। इसमें उपर्युक्त अधिकारी श्री गोपाल परिहार भी समलित रहे।





कृषि महाविद्यालय जोधपुर में एक दिवसीय मुर्गीपालन प्रबंधन में दक्षता प्रशिक्षण

माननीय कुलपति प्रो. बी आर चौधरी की अध्यक्षता में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई-दिल्ली द्वारा वित पोषित परियोजना एस. सी. एस. पी. के तहत कृषि महाविद्यालय जोधपुर में एक दिवसीय (04.02.2020) "ग्रामीण मुर्गी पालन में दक्षता कार्यक्रम" आयोजित किया गया। इसमें देशी मुर्गीपालन तकनीक के बारे में बताया गया। यह एक कुपोषण व बेरोजगारी को दूर करने का ग्रामीण स्तर पर एक अच्छा विकल्प है। मुर्गीपालन पर आधारित पुस्तिका "ग्रामीण मुर्गी पालन एवं प्रबंधन" का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. जब्बर सिंह सोलंकी कृषि विश्वविद्यालय, कोटा एवं श्री राम अवतार चौधरी, प्रोजेक्ट अर्पण सेवा संस्थान, उदयपुर, डॉ भैरुलाल डांगी, पशुपालन विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, बाड़मेर, डॉ एस पी वर्मा, सहायक प्राध्यापक, काजरी के विशेषज्ञ डॉ सुभाष कच्छावा शामिल रहे।



कृषि उच्च शिक्षा में जागरूकता हेतु एक दिवसीय कार्यशाला

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा युवाओं को कृषि उच्च शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करने बाबत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें जोधपुर जिले के समस्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य प्रतिभागी रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एवं महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के पूर्व कुलपति एवं कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के पूर्व अध्यक्ष डॉ अमर सिंह फरौदा ने कृषि उच्च शिक्षा में युवाओं का रुझान बढ़ाने का आवाहन करते हुये कहा कि आने वाले समय में बढ़ती आबादी को खाद्यान्न उपलब्ध करना एक बड़ी चुनौती होगी क्योंकि कृषि योग्य भूमि सिकुड़ती जा रही है, अतः खाद्यान्नों का उत्पादन, परिरक्षण एवं प्रसंस्करण आने वाले समय में खाद्यान्न उपलब्ध करवाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।

कार्यशाला की अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रोफेसर (डॉ) बी. आर. चौधरी द्वारा की गई। कुलपति डॉ चौधरी ने प्रतिभागियों को कहा कि भविष्य में कृषि में विविधिकरण एवं वातावरण अनुकूल नई फसलों का समावेश लाभदायक कृषि के लिए मील का पत्थर साबित होगें। कृषि शिक्षा में युवाओं को आकर्षित करने के लिए विभिन्न वक्ताओं द्वारा उद्भोदन दिये गये जिसमें प्रवेश प्रक्रिया, कृषि में रोजगार की सम्भावना एवं छात्रवृत्ति के बारे में बताया गया।





एस सी – एस पी परियोजना के अन्तर्गत ग्राम केरू में कार्यशाला

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा एस.सी. – एस.पी. परियोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति के लाभार्थियों के लिए सरकारी नीतियों के तहत वर्तमान प्रावधानों पर कार्यशाला का आयोजन ग्राम केरू, जोधपुर में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रोफेसर बी आर चौधरी माननीय कुलपति महोदय, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण परिवेश के बच्चों को कृषि शिक्षा के क्षेत्र में तैयारी करनी चाहिए एवं कृषि शिक्षा संबंधित सभी प्रकार की योजनाओं का लाभ लेने हेतु कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से सम्पर्क स्थापित कर कृषि को लाभदायक बनाने में प्रयास करने चाहिए।

श्री नरेश रमानी, जिला प्रबन्धन ने नाबार्ड द्वारा अनुसूचित जाति—जनजाती से सम्बन्धित योजनाओं के बारे में विस्तृत व्यौरा प्रस्तुत किया और कहा कि इन योजनाओं का लाभ बैंक के माध्यम से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। अनुसूचित जाति से संबंधित छात्रवृत्ति के बारे में अलग—अलग पोर्टल तथा फॉर्म भरने की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में लगभग 500 लाभार्थियों ने भाग लिया।

कोविड-19 का कृषि व शिक्षा पर प्रभाव प्रतियोगिता

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत एक राष्ट्र-स्तरीय ऑनलाइन प्रतियोगिता कोविड-19 का कृषि व शिक्षा पर प्रभाव का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में निवंध लेखन व पोस्टर निर्माण प्रतिस्पर्धाओं को शामिल किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन 17 से 30 जून 2020 के मध्य किया गया। इस प्रतियोगिता में देशभर के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के लगभग 1000 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विजेताओं का विवरण

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	श्रेणी एवं ईनाम राशि
निवंध लेखन प्रतियोगिता			
1.	भूमिका एस	कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़	प्रथम 5000/-
2.	अंकित तिवारी	सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ	द्वितीय 3000/-
3.	ऋतु यादव	चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय	तृतीय 1500/-
पोस्टर प्रतियोगिता			
4.	एस अभिषेक	उद्यानिकी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट	प्रथम 5000/-
5.	जे चन्द्रशेखर	आचार्य एन जी रंगा, कृषि विश्वविद्यालय	द्वितीय 3000/-
6.	कुमारी वैष्णव	आचार्य नरेन्द्र देव विश्वविद्यालय कृषि और प्रौद्योगिकी, कुमारगंज, अयोध्या	तृतीय 1500/-



माननीय कुलपति महोदय द्वारा विजेता राशि का चैक प्रदान करते हुए





कृषि एवं खाद्य संगठन की 75 वीं वर्ष गाँठ पर कार्यक्रम का आयोजन

कृषि एवं खाद्य संगठन (एफ.ए.ओ.) संघ की 75 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा आयोजित ऑन लाईन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 75 रु. का स्मारक सिक्का तथा 8 विभिन्न फसलों की 17 जैव-सर्वोत्तम किस्में राष्ट्र को समर्पित की गई।

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा की फसलों की किस्में जो स्थानीय भूमि और किसानों द्वारा विकसित किस्मों का उपयोग करके विकसित की गया है अन्य खाद्य सामग्री के साथ सामान्य भारतीय थाली को पोषक तत्त्वों वाली थाली में बदल देंगी। प्रधान मंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान में योगदान देने के लिए कृषि की प्रमुख भूमिका है। उन्होंने कहा की कृषि में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य किसानों को उत्पादक और उद्यमी दोनों बनाना है।



प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के अंतर्गत एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने के उद्देश्य से बनाई गयी पीएम एफएमई योजना – प्रधान मंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना के प्रचार-प्रसार हेतु कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा एक द्विसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित पोषित इस वेबीनार को वोकल फॉर लोकल एवं योजना की विस्तृत जानकारी स्थानीय उद्यमियों तक पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया। वेबीनार के अध्यक्ष प्रो. बी आर चौधरी, माननीय कुलपति, ने जोधपुर के स्थानीय खाद्य पदार्थों के विष्णन एवं इनके औषधीय गुणों की महता बताते हुए प्रसंस्करण ईकाइयों की स्थापना कर राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की बात कही। जिससे भारत के युवा सूक्ष्म खाद्य पदार्थों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सरकार की उक्त योजना के सहयोग से पहचान दिलाने की दिशा में कार्य करेंगे तथा इसी तरह से सुपर फूड के विष्णन एवं प्रसंस्करण के बारे में बताया। वेबीनार के मुख्य अतिथि प्रो. एन. एस. राठौड़, माननीय कुलपति, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर थे।





राष्ट्रीय कृषि शिक्षा दिवस

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने भारत के प्रथम राष्ट्रीय कृषि केंद्रीय मंत्री डॉ राजेंद्र प्रसाद के जन्मदिन के उपलक्ष्य में घोषित राष्ट्रीय कृषि शिक्षा दिवस को डॉ एस के मल्होत्रा, कृषि आयुक्त, भारत सरकार, नई दिल्ली के मुख्य अतिथि में दिनांक 03.12.2020 को हर्षलालस से मनाया। यह कार्यक्रम को कोविड -19 की परिस्थिति को देखते हुए ऑनलाइन संपादित किया गया। प्रो. बी.आर चौधरी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कृषि शिक्षा पर सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए राज्य सरकार का विश्वविद्यालय में दो नये संकायों की अनुमति के लिए आभार जताया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ एस के मल्होत्रा, कृषि आयुक्त, भारत सरकार, नई दिल्ली ने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के प्रयासों की सरहाना करते हुए संबोधन में बताया की भारत 2023 में मिलेट्स पर होने वाले अनुसंधान में विश्व की अगुवाई करने जा रहा है जिसमें हमें बहुत अहम् रोल अदा करना है। भारत को कृषि क्षेत्र में कृषि व्यवसाय पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया।



राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (NAHEP) स्वीकृत की गई है जिसमें कुल 495.82 लाख की वित्तीय स्वीकृति पांच वर्षों के लिए (वित्तीय वर्ष 2017–18 से 2021–2022 तक) प्रदान की गई। इस परियोजना में विश्वविद्यालय के संघटक तीनों महाविद्यालयों में स्मार्टक्लास रूम, सीसीटीवी कैमरा, आधुनिक प्रयोगशाला उपकरणों की स्थापना के साथ नवीनीकरण, फ्यूमीगेशन चेम्बर, पशुशाला एवं कम्पोस्ट खाद इकाई की स्थापना की गई। इसके अन्तर्गत प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए देश-विदेश के विभिन्न संस्थानों में सम्मेलनों, सेमिनार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। विश्वविद्यालय के तीनों संघटक महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में हर विषय की पर्याप्त संख्या में पुस्तकों उपलब्ध करवानें में भी राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना का महत्वपूर्ण योगदान हैं।



वैशिक पर्यावरण सुविधा और जैव विविधता परियोजना

कृषि महाविद्यालय मंडोर में इस परियोजना का संचालन वर्ष 2018 से शुरू हुआ। कृषि विश्वविद्यालय को इस परियोजना में 32 हजार डालर तीन वर्षों के लिए जैव विविधता के लिए प्रदान किये गए। इस परियोजना के अंतर्गत 283 लैंडरेसस की उत्पादकता का परीक्षण किया जा रहा है, जिसमें राजस्थान की प्रमुख फसलें बाजरा, मूँग, मोठ, सरसों व जीरा पर किसानों की मदद से जैव सुरक्षा एवं विभिन्नता पर काम किया जा रहा है।



एससी— एस पी परियोजना

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित कुल 70 लाख रुपये की एस सी— एस पी परियोजना अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के कल्याण के लिए स्वीकृत की गई। यह परियोजना अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए आई.सी.ए. आर. द्वारा स्वीकृत की गयी है, जिसमें स्वीकृत राशि का परियोजना में विदित मानकों एवं घटकों को ध्यान में रखते हुए अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परीक्षाओं में भाग लेने के लिए निपुण करना है। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए विषय विशेषता एवं उद्यमीयों को आमंत्रित कर सामान्य ज्ञान, व्यक्तित्व विकास, राज्य स्तरीय प्रीपीजी परीक्षा, राष्ट्र स्तरीय कनिष्ठ अनुसंधान अध्येयता एवं राज्य स्तरीय अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं इत्यादि के लिए अध्यापन करवाना है। विद्यार्थियों को खाद्य प्रसंस्करण, मशरूम उत्पादन, ब्रेनस्टोरमिंग सेसन, क्षमता निर्माण प्रशिक्षण, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन एवं अन्य व्यवहारिक विकास के लिए प्रशिक्षण दिया गया।

राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन

विश्वविद्यालय के अधीन संचालित विभिन्न महाविद्यालयों में दिनांक 29 अगस्त को हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचन्द की जयंती को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया गया। इस दौरान कबड्डी, वॉलीवाल, फुटबाल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन इत्यादि खेलों का आयोजन किया गया।





अनुसंधान

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की स्थापना वर्ष 2013 में अधिनियम 21 के तहत 14 सितम्बर 2013 को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के छ: जिलों में कृषि शिक्षा, कृषि अनुसन्धान व कृषि विस्तार के माध्यम से इस क्षेत्र के समग्र विकास के उद्देश्य से की गई। राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 342 लाख हेक्टेयर में से 97 लाख हैक्टर (28 प्रतिशत) इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आता है। कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में छ: जिले (जोधपुर, बाड़मेर, नागौर, पाली, जालौर एवं सिरोही) शामिल हैं, जिसमें राज्य की 21.1 प्रतिशत मानव तथा 29.3 प्रतिशत पशु आबादी निर्वाह करती है। इस नवीन कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पश्चिमी राजस्थान के तीन कृषि जलवायु खण्ड आते हैं जो इस प्रकार हैं:-

खण्ड 1ए—शुष्क पश्चिमी मैदान (जोधपुर एवं बाड़मेर),

खण्ड 2बी—लूपी नदी का अन्तर्वर्ती मैदानी क्षेत्र (जालौर, पाली एवं सिरोही) तथा

खण्ड 2ए का एक हिस्सा—अन्तः स्थलीय जलोत्सारण के अन्तर्वर्ती मैदानी क्षेत्र (नागौर जिला)

कृषि विश्वविद्यालय अधीन इन छ: जिलों में वार्षिक वर्षा 100 मिमी से लेकर 600 मिमी तक होती है जो कृषि के लिहाज से काफी विषमाजनक परिस्थितियाँ दर्शाती हैं। खरीफ एवं रबी फसलों का राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का क्रमशः 31.7 प्रतिशत एवं 18.8 प्रतिशत हिस्सा इन जिलों के अन्तर्गत आता है।

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार

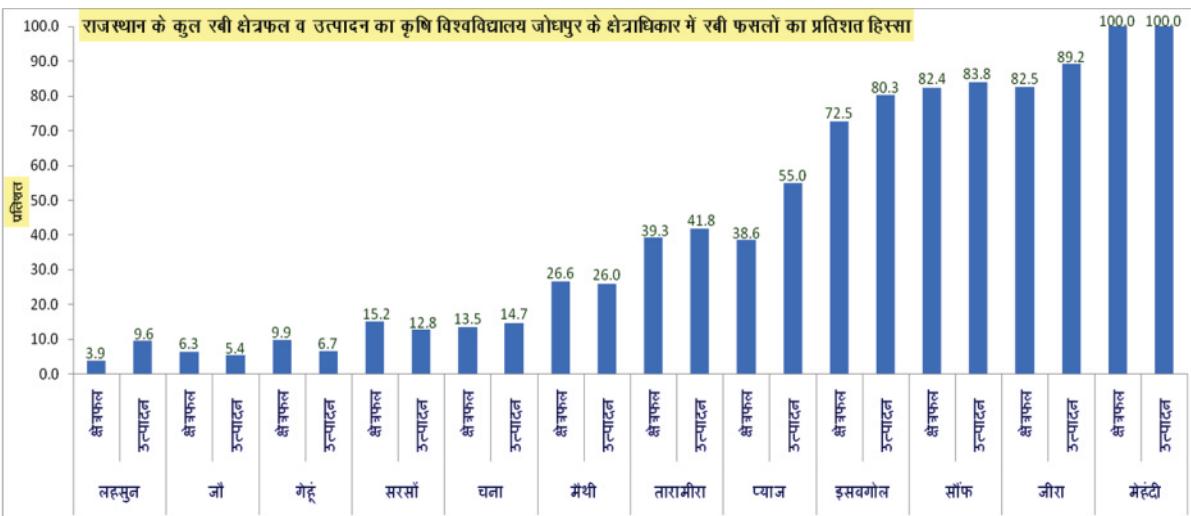
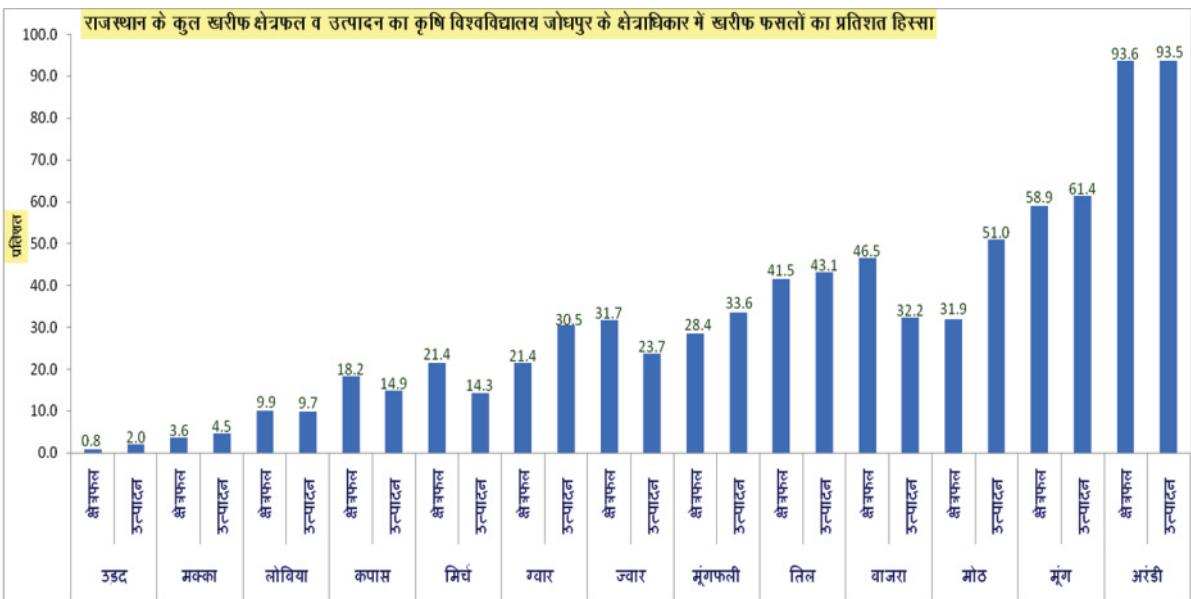
क्र. सं.	विवरण	राजस्थान	कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर	राज्य में विश्वविद्यालय क्षेत्राधिकार प्रतिशत
1.	भौगोलिक क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर) खरीफ क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर) रबी क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर)	342.2 162.3 128.0	96.5 51.4 24.0	28.2 31.7 18.8
2.	जनसंख्या (2011)	68621012	14505237	21.1
3.	पशुधन (2012)	57732204	16941577	29.3

कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में जिलेवार खरीफ व रबी में कुल क्षेत्रफल (लाख हेक्टेयर)

कृषि जलवायु खण्ड	जिला	क्षेत्र फल (लाख हेक्टेयर)		
		खरीफ	रबी	कुल
1ए	जोधपुर	12.20	6.11	18.31
	बाड़मेर	15.02	3.92	18.94
	कुल	27.22	10.03	37.25
2ए	नागौर	12.36	6.31	18.67
2बी	जालौर	5.63	3.22	8.85
	पाली	4.84	3.83	8.67
	सिरोही	1.33	0.64	1.96
	कुल	11.80	7.69	19.49
कुल योग		51.38	24.03	75.41



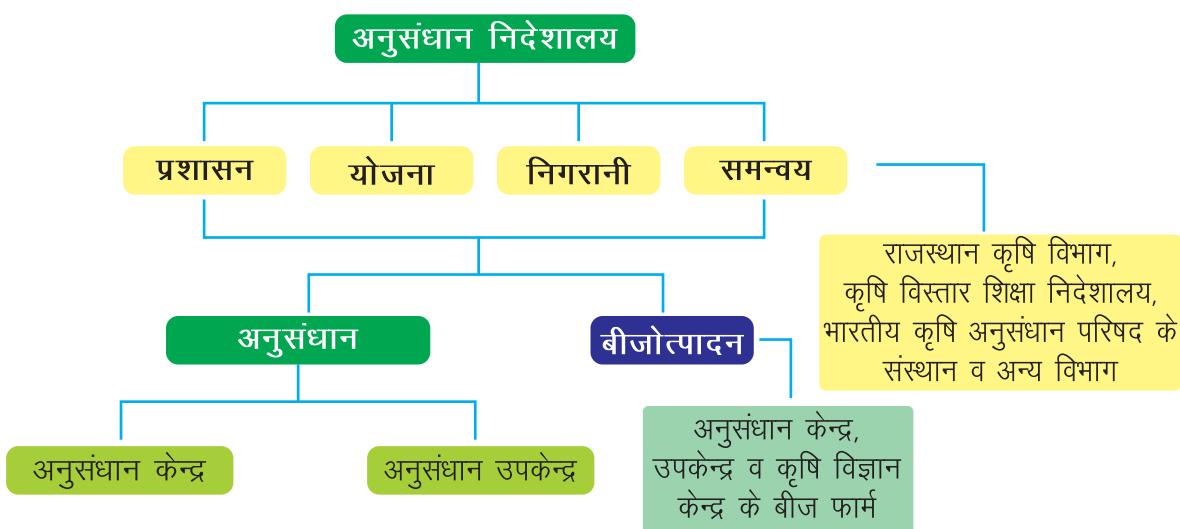
कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के क्षेत्राधिकार में विभिन्न फसलों का प्रतिशत क्षेत्र व उत्पादन





कार्य क्षेत्र

कृषि अनुसंधान निदेशालय का मुख्य कार्य प्रयोगों की योजना, समन्वय, निगरानी एवं आवश्यकता जनित कृषि प्रौद्योगिकी का विकास करना है। इस हेतु कृषि जलवायु खण्ड की कृषि आवश्यकताओं के अनुसार शोध कार्य किये जा रहे हैं। अनुसंधान कार्य के लिए निदेशालय विभिन्न स्त्रोतों से वित्तीय सहायता के लिए प्रयास करता है। निदेशालय के अन्तर्गत दो कृषि अनुसंधान केन्द्र व तीन कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र स्थापित हैं।



कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर की विभिन्न इकाईयों पर अनुसंधान एवं बीज उत्पादन क्षेत्र

इकाई / केन्द्र	कृषि जलवायु खण्ड	कुल उपलब्ध क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	कुल सिंचित क्षेत्रफल (हेक्टेयर)
कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, समदड़ी, बाड़मेर	1ए 1ए	61.12 28.25	57.32 18.00	57.32 —
कृषि अनुसंधान केन्द्र, केशवाना, जालौर कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र / कृषि महाविद्यालय, सुमेरपुर (पाली)	2बी 2बी	64.00 46.36	54.00 41.70	54.00 32.00
कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र / कृषि महाविद्यालय, नागौर	2ए	90.00	80.00	—
कुल		289.73	251.02	143.32



कृषि जलवायु खण्डों की विशेषताएँ

शुष्क मैदानी पश्चिमी क्षेत्र (खण्ड 1ए) : इस खण्ड का कुल क्षेत्रफल 53 लाख हैक्टेयर हैं जिसमें 27 लाख हैक्टेयर कृषि योग्य है। इसमें से 89 प्रतिशत क्षेत्र वर्षा आधारित एकल फसल प्रणाली के अन्तर्गत है तथा 11 प्रतिशत क्षेत्र में कुओं से सिंचाई होती है। खण्ड का काफी हिस्सा रेगिस्तान के धोरों में आता है। यहाँ कम जीवांशयुक्त बारीक बुलई-दोमट से मोटी रेतीली मृदाएँ हैं। वर्षा ऋतु में छोटे से मध्यम ऊँचाई वाले टिब्बो के ढलान पर खेती होती है। इस खण्ड में औसत वार्षिक वर्षा 100 मि.मी. पश्चिम में तथा 300 मि.मी. पूर्वी भाग में जुलाई से सितम्बर तक होती है। जनवरी के महिने में औसत अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान क्रमशः 24.6° तथा 9.5° सेल्सियस जबकि मई में 41.6° तथा 27.3° सेल्सियस रहता है। गर्मियों के महिनों में तेज हवाओं के साथ तापमान काफी ऊँचा (49° सेल्सियस) चला जाता है। प्रायः बारानी स्थितियों में बाजरा, तिल, मूंग, मोठ व ग्वार आदि फसलें उगाई जाती हैं। जहाँ भूजल झोतों से पानी उपलब्ध हो पाता है, वहाँ कुओं द्वारा सिंचाई के अन्तर्गत खरीफ फसलें जैसे मूंगफली, अरण्डी व मिर्च तथा रबी में राया, गेहूँ जौ, जीरा, ईसबरगाल आदि की खेती की जाती है।



खण्ड 1ए की सूक्ष्म कृषि जलवायु परिस्थितियाँ

कृषि जलवायु परिस्थितियाँ एवं उनके अन्तर्गत पंचायत समितियाँ	प्रतिशत क्षेत्रफल	लाख हैक्टेयर
कम वर्षा (150 से 370 मि.मी.), रेतीले टिब्बो के बीच असमतल क्षेत्र (जोधपुर, ओसिया, शेरगढ़, फलोदी, बाड़मेर, शिव, सिणदरी)	41.54	10.88
कम कर्षा तथा समतल रेतीले क्षेत्र (लूनी, शेरगढ़, फलोदी, बाड़मेर, सिवाना, शिव)	32.16	8.42
कम वर्षा, मध्यम से भारी मृदाएँ जिसके नीचे कठोर परत का होना (लूनी, फलोदी, बाड़मेर, शिव, सिवाना, सिणदरी)	15.12	3.96
उपरोक्त तीनों परिस्थितियों का सिंचित क्षेत्र	11.18	2.93

लूणी नदी का अन्तर्वर्ती मैदानी क्षेत्र (खण्ड 2बी) : लूणी नदी का अन्तर्वर्ती मैदानी क्षेत्र राजस्थान प्रदेश के दक्षिण पश्चिमी भू-भाग में स्थित है। इस क्षेत्र का विस्तार पूर्व में अरावली पहाड़ियों के तल से पश्चिम में बाड़मेर जिले की सीमा तक, उत्तर में अजमेर व दक्षिण में गुजरात की सीमा तक फैला है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3.01 मिलियन हैक्टर है जो राजस्थान राज्य के सम्पूर्ण क्षेत्र का 8.5 प्रतिशत है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत जालौर व पाली जिलों की सभी तहसीलें, जोधपुर जिले की बिलाडा व भोपालगढ़ तहसीलें तथा सिरोही जिले की शिवगंज, सिरोही व रेवदर तहसीलें हैं। यह क्षेत्र अरावली पहाड़ियों के पश्चिमी किनारे पर समुद्र तल से 300–600 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। लूणी व इसकी सहायक नदियों की धारायें कच्च के रण में मिलती हैं। सामान्यतया सिरोही जिले के कुछ भाग छोड़कर शेष क्षेत्र की जलवायु शुष्क है। गर्मियों में यहाँ का तापमान अधिकतम 35 से 45 डिग्री व सर्वियों में न्यूनतम तापमान 1 से 5 डिग्री रहता है। वार्षिक वर्षा का अनुपात अलग अलग स्थानों पर अलग अलग रहता है। जोधपुर जिले की तहसीलों में औसत वार्षिक वर्षा 330 मिलीमीटर तथा पाली में 661.90 मिलीमीटर के लगभग है। जालौर में 426 मिलीमीटर और सिरोही जिले में 712.4 मिलीमीटर के आसपास है। सम्पूर्ण क्षेत्र में वर्षा के मौसम और समयावधि में भी बदलाव दिखाई देता है। यहाँ वर्षा के औसत दिन 19 से 26 हैं और वर्षा के दिनों में 57–69 प्रतिशत आर्द्रता मिलती है।



अन्तः स्थलीय जलोत्सारण के अन्तर्वर्ती मैदानी क्षेत्र (खण्ड 2ए – नागौर जिला) : नागौर जिला राजस्थान के पश्चिमी भाग में $26^{\circ} 25'$ से $27^{\circ} 40'$ उत्तरी अक्षांश और $73^{\circ} 18'$ से $75^{\circ} 15'$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। यह 17778 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है। जिसमें से 17448.5 वर्ग किमी ग्रामीण क्षेत्र और 269.5 वर्ग किमी शहरी क्षेत्र है। नागौर जिले के उत्तर में बीकानेर और चुरू जिले, पूर्व में सीकर और जयपुर जिले, दक्षिण में अजमेर और पाली जिले और पश्चिम में जोधपुर जिला हैं। जिले में कुल 13 तहसीलें (नागौर, खीवसर, जायल, डेगाना, डीडवाना, लाडनू, पर्वतसर, मकराना, नावा, कुचामन, रियानबाड़ी और मुंडवा) हैं। जिले को 14 ब्लॉक पंचायत समितियाँ (नागौर, खीवसर, मुंडवा, जायल, मेडता, रियान, डेगाना, डीडवाना, मोलासर, लाडनू, पर्वतसर, मकराना, नावा और कुचामन) में बांटा गया है जिनमें से 7 पंचायत समितियाँ डीडवाना, डेगाना, मोलासर, परबतसर, मकराना, नावा और कुचामन कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर द्वितीय के अधिकार क्षेत्र में हैं शेष कृषि विज्ञान केन्द्र, नागौर प्रथम के अधिकार क्षेत्र में हैं। जिले में 300 मिलीमीटर तक वार्षिक वर्षा होती है तथा खरीफ में बाजरा, मोठ, चंवला व ग्वार और रबी में गेहूं, जौ और सरसों फसलें प्रमुख रूप से उगायी जाती हैं।

अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य

यह विश्वविद्यालय मुख्यतः अधिक पैदावार देने व सूखा सहन करने वाली किस्मों को विकसित करने में प्रयासशील है। साथ ही उन्नत शर्स्य क्रियाएँ विकसित करने, रोग व कीड़ों के नियंत्रण हेतु नये—नये शोध कार्य जारी है। विश्वविद्यालय इस क्षेत्र की आवश्यकता जनित शोध कार्य को बढ़ावा देता है। अनुसंधान के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

- ◆ इस क्षेत्र की मुख्य फसलों की अधिक उपज देने, जल्दी पकने, सूखा सहने तथा कीड़े व रोगों के प्रति सहनशील / प्रतिरोधी किस्में विकसित करना।
- ◆ फसल उगाने हेतु वर्षा आधारित स्वा—स्थाने नभी संरक्षण तकनीकी विकसित करना।
- ◆ विभिन्न फसलों की फसल ज्यामिति, कीड़े एवं बीमारियों का प्रबन्धन, समन्वित खरपतवार व पौष्क तत्व प्रबन्धन, अन्तराशर्स्य और लाभकारी फसल प्रणाली विकसित करना।
- ◆ अपरम्परागत, अल्प प्रयुक्त फसलें, क्षमतावान तथा औषधीय एवं सुगन्धित फसलों की इस क्षेत्र में खेती हेतु पहचान करना।
- ◆ फवारा एवं बूंद—बूंद सिंचाई प्रणाली हेतु सिंचाई की समय सारणी निर्धारित करना।
- ◆ विभिन्न फसलों के लिये जैविक कृषि विधियां विकसित करना।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रयोजनाएँ

विश्वविद्यालय में निम्नलिखित दो अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं, एक नेटवर्क व एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना चलित हैं:-

क्र.सं.	परियोजना का नाम	परियोजना प्रारम्भ वर्ष
1.	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना – तिल	1968
2.	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना – अरण्डी	1987
3.	अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान नेटवर्क – क्षमतावान फसलें	1996
4.	राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत मसाला विकास पर केन्द्रीय वित्तपोषित योजना	2004–05



राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत परियोजनाएँ

क्र. सं.	परियोजना का नाम	परियोजना प्रारम्भ वर्ष	कुल स्वीकृत राशि (लाख में)	कुल प्राप्त राशि (लाख में)	अवधि
1.	इस्टैब्लिशमेंट ऑफ किसान कौशल विकास केंद्र: ए मॉडल फॉर एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी	2016–17	1360.47	696.82	5 वर्ष
2.	इस्टैब्लिशमेंट ऑफ ऐटिक एंड डिजिटल लाइब्रेरी कम इनफारेंशन टेक्नोलॉजी टूल बेर्सड ऑन इंटरैक्टिव सिस्टम फॉर फार्मर्स ट्रेनिंग एंड बेनिफिट एट एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, जोधपुर	2016–17	743.36	404.92	5 वर्ष
3.	स्ट्रेंथेनिंग ऑफ सीड प्रोसेसिंग एंड ग्रेडिंग फैसिलिटी फॉर क्वॉलिटी सीड प्रोडक्शन टू एनहान्स एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिविटी ऑफ एरिड एंड सेमि एरिड रीजनस ऑफ राजस्थान	2016–17	531.26	423.36	5 वर्ष
4.	वराईटल डेवलपमेंट ऑफ इसबगोल फॉर हाई यील्ड एंड कवालिटी	2016–17	91.91	21.21	2 वर्ष
5.	मल्टिलोकेशन इवेल्यूएशन ऑफ नेशनवाइड रिलीजड वैराइटीज ऑफ फील्ड एंड एनुअल हॉर्टिकल्चरल क्रॉप्स अंडर एरिड एंड सेमि एरिड कलाइमेट एंड इट्स प्रमोशन फॉर एन्हान्सिंग प्रोडक्टिविटी फॉर फार्मर्स बेनिफिट	2016–17	162.61	31.31	2 वर्ष
6.	जेनेटिक इम्यूबमेंट एंड डेवलपमेंट ऑफ प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ प्यूचर क्रॉप्स लाइक चिया, किवनोआ एंड ड्रैगन फ्रूट	2016–17	76.85	18.20	2 वर्ष
7.	स्केलिंग—अप वाटर पोटेंशियल ऑन कंप्यूटर एंड सेसरं बेर्स्ड फॉर प्रीसाइंस यूज ऑफ इरीगेशन वाटर इन डिफरेंट वैजिटेबल क्रॉप्स इन लाइट टेक्सचरड सैंडी सॉयल्स ऑफ वेस्टर्न राजस्थान	2016–17	195.96	122.72	2 वर्ष
8.	एस्टैब्लिशमेंट ऑफ मॉडल नर्सरी फॉर मल्टिप्लिकेशन ऑफ प्रोमिसिंग कल्टीवर्स ऑफ एरिड फ्रूट्स	2016–17	130.38	34.72	2 वर्ष
9.	जेनेटिक इम्यूबमेंट एंड डेवलपिंग प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ हिना	2016–17	108.49	43.13	2 वर्ष
10.	स्टडीज ऑन क्रॉपिंग सीक्वेंस एंड इन्टरक्रोपिंग मॉडूल्स टू मिनीमाइज रिस्क इन्कर्ड इन क्यूमिन कल्टीवेशन फॉर बेनिफिट ऑफ ग्रोवर्स	2017–18	77.75	49.98	4 वर्ष
11.	डेवलपमेंट ऑफ इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम मॉडूल्स फॉर स्माल फार्म होल्डर्स एंड ट्राइबल फार्मर्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट सिरोही	2018–19	168.62	103.97	3 वर्ष
12.	एन एप्रोच टुबर्जस टू फार्मर्स इनकम एनहांसमेंट इन बाडमेर डिस्ट्रिक्ट ऑफ राजस्थान	2018–19	305.12	192.91	3 वर्ष
13.	सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट	2020–21	590.0	-	5 वर्ष
14.	प्रोसेसिंग एंड वैल्यू एडिशन ऑफ सुपर फूड्स चिया एंड विवनोआ	2020–21	294.91	-	3 वर्ष
	योग	-	4759.94	2143.25	-



गैर-सरकारी कंपनियों के उत्पादों की प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र. सं.	कम्पनी का नाम	परीक्षण उत्पाद व फसल	मौसम और वर्ष
कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर			
1.	Bayer	Bajra hrbird 9450	खरीफ 2015 व 2016
2.	Rallis	Growth permoter Tata Bahar in Cumin	रबी 2015–16
3.	Ajeet	BT Cotton	खरीफ 2016
4.	Bayer	Bajra hybrid XMT-1358	खरीफ 2016
5.	Ankur	BT Cotton hybrid ankur 4252 BG II & Ankur 216 BG II	खरीफ 2016
6.	SNF India Pvt. Ltd	AQUASORB, Peral millet & Cluster bean	खरीफ 2016
7.	Sulphur Mills Ltd	Fertis, Mustard	रबी 2016–17
8.	Sulphur Mills Ltd	Fertis, Cumin	रबी 2016–17
9.	Bayer	Natiro 75 WG on cumin	रबी 2016–17 व 2017–18
10.	Bayer	Solomon 3000D on Wheat	रबी 2016–17 व 2017–18
11.	Bayer	Proagro 5222 Proagro Kesasi Gold	रबी 2016–17
12.	Rallis India Ltd.	Taqat 75 & W.P. Cumin	रबी 2016–17
13.	SNF India Pvt. Ltd	AQUA SORB, Peral millet & Clusterbean	खरीफ 2017
14.	Lucid colloids Ltd	Flavorin Agro Complete Clusterbean	खरीफ 2017
15.	Sulphur Mills Ltd	Fertis, Cumin and Mustard	रबी 2017–18
16.	UPL Ltd.	DOST Super (Pendime Thalin 38.7% CS)	रबी 2017–18 व 2018–19
17.	Rallis India Ltd.	Taqst 75& W.P. Cumin	रबी 2017–18
18.	Bayer	Mustard hybrid 5222	रबी 2017–18
19.	Willowood Chamical Pvt.	Pyaclostrovbin 133g/l+expoxiconazole 50g/l SE on groundnut	खरीफ 2018 व 2019
20.	Willowood Chamical Pvt.	Pyaclostrovbin 133g/l+expoxiconazole 50g/l SE on Maize	खरीफ 2018 व 2019
21.	Willowood Chamical Pvt.	Pyaclostrovbin 133g/l+expoxiconazole 50g/l SE on cumin	रबी 2017–18 व 2018–19
22.	Cytrozyme Las Ius, USA	SDMACRO, Cumin	रबी 2017–18
23.	UPL Ltd.	DOST Super, Cumin	रबी 2017–18 व 2018–19
24.	UPL Ltd.	GPF 215- chilli	खरीफ 2018 व 2019
25.	Best Crop Sci. Ltd	Chlorantraniliprade 18.5% SC- Cabbage, Brinjal, Groundnut, 5% SC Brinjal, Chickpea	2017–18
26.	UPL Ltd.	UPL 116 Groundnut	खरीफ 2018 व 2019
27.	Bayer Crop Sci Ltd	Spirotetramat 30g/l+Diafemthiuron 120g, Cotton & Chilli	खरीफ 2019 व 2020



क्र. सं.	कम्पनी का नाम	परीक्षण उत्पाद व फसल	मौसम और वर्ष
कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर, जोधपुर			
28.	Lucid colloids Ltd	Flavorin Agro Complete Clusterbean	खरीफ 2018
29.	Sulphur Mills Ltd	Fertis Cumin	रबी 2018–19
30.	Cytozyme Las Ius, USA	SDMACRO, Cumin	रबी 2018–19
31.	SNF India Pvt. Ltd	Flobond DI 2010 on Tomato	रबी 2019–20
32.	UPL Ltd.	GPH- 0319	खरीफ 2019 व 2020
33.	Rallis India Ltd.	Raillis Fungicide Sarthak and RIL	रबी 2019–20 व 2020–21
34.	UPL Ltd.	GPI 418 for Tomato	रबी 2019–20
35.	UPL Ltd.	GPI 418 for Cumin	रबी 2019–20
36.	Indofil Industries Ltd. Mumbai	Bioeffeciacy & Phytotoxicity of Zineb 75% WP on Cumin (Two season)	रबी 2020–21 व 2021–22
37.	UPL Limited	Bioeffeciacy & Phytotoxicity evaluation of insecticides UPI-120 on cotton (Two season) 2 year	2020.21 व 2021.22
38.	SWAL Corporation	GPF-219 in Chilli	खरीफ 2020 व 2021
39.	Bayer Crop Sci Ltd	Solomon 300 OD in Cumin	रबी 2020–21 व 2021–22
40.	Corteva Agri Science	Mustard Hybrid 45S42 CL for tolerance against Orobanche	रबी 2020–21 व 2021–22
41.	Bayer Crop Sci Ltd	Efficacy evaluation of fluopyram 250 g/l +Trifloxystrobin 250 g/l sc (Luna sensation) in pomegranate	खरीफ 2021
42.	Bayer Crop Sci Ltd	Efficacy evaluation of isotianil 7% + fosetyl al 70% wg (Tiviant) in pomegranate	खरीफ 2021
43.	Bayer Crop Sci Ltd	Efficacy and crop safety evaluation of Glyphosate Ipa salt 41% w/w sl in pomegranate orchard	खरीफ 2021
44.	Bayer Crop Sci Ltd	Test protocol for evaluation of Ambition as a bio stimulant in chilli crop	खरीफ 2021
कृषि अनुसंधान केन्द्र, जालौर			
45.	UPL Ltd.	DOST Super, Cumin	रबी 2017–18 व 2018–19
46.	UPL Ltd.	GPI 418 for Chickpea	रबी 2019–20
47.	UPL Ltd.	GPI 418 for Cumin	रबी 2019–20
कृषि अनुसंधान उप-केन्द्र, सुमेरपुर			
48.	UPL Ltd.	Metolachor 50% EC Maize	खरीफ 2017 व 2018
49.	UPL Ltd.	UPL 116 Maize	खरीफ 2018 व 2019
50.	UPL Ltd.	UPH-515	खरीफ 2019 व 2020
51.	UPL LTD.	GPI 418 In Chilli	खरीफ 2020 व 2021
52.	Bayer Crop Sci Ltd	Evaluation of Ambition as a bio stimulant in pomegranate	खरीफ 2021
53.	Bayer Crop Sci Ltd	Evaluation of Bayfolan Algae as a bio stimulant in pomegranate	खरीफ 2021
कृषि महाविद्यालय, नागौर			
54.	Bayer Crop Sci Ltd	Fluopyram 400 SC Velum Prime on pomegrante	2019–20 व 2020–21



**कृषि खण्ड 1ए और 2बी के पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज में शामिल अनुसंधान अनुशंसाएँ
राजस्थान के कृषि खण्ड 1ए और 2बी के पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज में शामिल करने के लिए जर्क बैठक द्वारा
अनुशंसित प्रौद्योगिकियों की कुल संख्या (2016–2021)**

खरीफ वर्ष	खण्ड 1ए		खण्ड 2बी		रबी वर्ष	खण्ड 1ए		खण्ड 2बी	
	किस्में	तकनीक	किस्में	तकनीक		किस्में	तकनीक	किस्में	तकनीक
2017	6	1	6	5	2017–18	6	2	6	2
2018	0	3	0	3	2018–19	8	3	3	5
2019	3	7	3	1	2019–20	4	3	0	2
2020	1	7	3	6	2020–21	1	4	3	6
2021	1	3	3	4	2021–22	1	6	0	6
कुल	11	21	15	19	कुल	20	18	12	21

राजस्थान के कृषि खण्ड 1ए और 2बी के पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज में शामिल की गई विभिन्न फसलों की किस्में (2016 से 2021)

खरीफ वर्ष	फसल का नाम	अनुशंसित किस्में
2017	मूगफली भिण्डी लौकी	आर.जी. 510 अपराजिता, शक्ति युएसएम श्रवण, पूसा नवीन
2019	मूंग उड्ढद	जी.ए.एम. 5 व जी.एम. 6 एम.यू. 2 व पी. यु. 1
2020	मूंग अरण्डी	एम.एच. 421 जी.सी.एच. 8
2021	तिल नेपियर	आर.टी. 372 सीओ 4 व सीओ 5

रबी वर्ष	फसल का नाम	अनुशंसित किस्में
2017–18	मैथी सौंफ लहसून	आर.एम.टी. 143, ए.एफ.जी. 3 आर.एफ. 157 यमूना सफेद 3, यमूना सफेद 9 व भीमा परपल
2018–19	गेहूँ चना सौंफ मैथी	डी.बी.डब्ल्यू. 88, एम.पी. 1201, डब्ल्यू. एच. 1124, एच. आई. 8713 और डी.बी. डब्ल्यू. 90 जी.एन.जी. 2144 जी.एफ. 12 ए.एफ.जी. 1



रबी वर्ष	फसल का नाम	अनुशंसित किस्में
2021–20	गेहूँ चना राया	राज. 4079 जी.एन.जी. 2171 गिरीराज व आर.एच. 749
2020–21	गेहूँ बैंगन	एच.आई. 1605 एन.एच.सी. 627बी
2021–22	पीली सरसों	वाई.एस.एच. 0401

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा विकसित किस्में

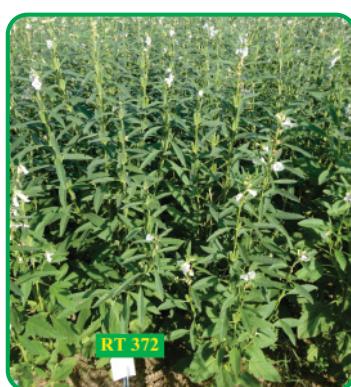
फसल	किस्म	कुल
तिल	आर.टी.46, आर.टी.54, आर.टी.103, आर.टी.125, आर.टी.127, आर.टी.346, आर.टी. 351, आर.टी. 372	8
बाजरा	एम.बी.सी. 2, एम.पी.एम.एच. 17, एम.पी.एम.एच. 21	3
राजगिरा	आर.एम.ए. 4, आर.एम.ए. 7	2
अरण्डी	आर.एच.सी. 1, एम.सी.आई. 8	2
मिर्ची	आर.सी.एच. 1	1
मोठ	आर.एम.ओ. 40, आई.पी.सी.एम.ओ. 880,	2
ग्वार	आर.जी.एम. 112	1
जीरा	आर.जे.डे 209 (collaborative)	1
मूँगफली	टी.बी.जी. 39 in collaboration of BARC & SKRAU	1
ईसबगोल	आर.आई. 1, आर.आई. 89	2
कुलथी	के.एस. 2	1
तुम्बा	आर.एम.टी 59	1

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीन किस्में

तिल

आरटी 372 (2019)

आर.टी. 372 सफेद बीज वाली तिल की किस्म है। जिसमें 41 दिनों में फूल आते हैं एवं कैप्सूल शाखाओं पर आमने—सामने लगते हैं। यह किस्म 87 दिनों में परिपक्व हो जाती हैं तथा इसकी औसत बीज उपज 610 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर और तेल उपज 321.1 किलो प्रति हेक्टेयर है। यह अल्टररिया पत्ती धब्बा, जीवाणु पत्ती धब्बा और चुर्णिल आसिता रोग के लिए प्रतिरोधी है। यह किस्म पत्ती मोड़क कीट और कैप्सूल बोरर (एंटीगास्ट्रा) के लिए मामूली प्रतिरोधी है। बीज, तेल उपज और रोग प्रतिरोध के गुणों को देखते हुए, आर.टी. 372 को देश के जोन-1 में खरीफ मौसम की वर्षापोषित स्थिति के लिए राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, नागालैंड, कर्नाटक और तेलंगाना राज्यों के कुछ हिस्सों में उगाने हेतु जारी की गई।





बाजरा

एम.पी.एम.एच. 17 (2013)

यह एक दोहरा उद्देश्य वाला संकर है जो आईसीएमए 04999 (मादा) और एमआईआर 525-2 (नर) के संकरण से उत्पन्न किया गया है। इसके 48 दिनों में फूल आते हैं और यह 79 दिनों में पकता है। इसके पौधों की ऊँचाई 181 सेमी तथा सिंडु 26 सेमी लम्बे एवं सघन होते हैं जिनमें गोलाकार और भूरे रंग के मध्यम आकार के दाने (1,000 बीज का वजन 6.5 ग्राम) होते हैं। यह किस्म ज्यादा दाने के साथ—साथ ज्यादा चारे की भी पैदावार देती है। इसकी औसतन पैदावार 2835 किग्रा / हेक्टेयर होती है।



MPMH 17
(MH 1663)



MPMH 21 (MH1777)

एम.पी.एम.एच. 21 (2016)

यह भी एक दोहरा उद्देश्य वाला संकर है जो दाने के साथ चारे की भी पैदावार देता है। इसकी औसतन पैदावार 20 किव./हेक्टेयर होती है। इसके 47 दिनों में फूल आते हैं और यह 75 दिनों में पकता है। इसके लगभग 20 सेमी लम्बे सघन सिंडु होते हैं जिनमें गोलाकार और भूरे रंग के मध्यम आकार के दाने (1,000 बीज का वजन 7.8 ग्राम) होते हैं। इसके पौधों की ऊँचाई 169 सेमी तक होती है। यह डाउनी मिल्ड्यू ब्लास्ट और स्मट के लिए भी प्रतिरोधी है।

विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध कुल प्रभेदों की संख्या (2020 तक)

क्र.सं.	फसल	प्रभेदों की संख्या
1.	तिल	1200
2.	अरण्डी	250
3.	बाजरा	2700
4.	ग्वार	70
5.	राजगिरा	250
6.	विवनोआ	100

क्र.सं.	फसल	प्रभेदों की संख्या
7.	चिया	120
8.	राया व सरसों	180
9.	ईसबगोल	60
10.	जीरा	100
11.	गेहूं	250
12.	मैथी	75

विभिन्न फसलों के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों की संख्या

फसल	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21	कुल
तिल	50	20	20	20	25	25	160
सरसों	—	20	20	70	45	50	205
अरण्डी	115	50	50	50	75	100	440
जीरा	—	25	30	30	30	30	145
मैथी	—	20	20	20	20	20	100
कुल	165	135	140	190	195	225	1050



कृषि खण्ड 1ए और 2बी के पी.ओ.पी. में शामिल की गयी अनुसंधान अनुशंसायाँ (2016–2020)

तिल

1. तिल में अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा व चूर्णित आसिता रोग की रोकथाम हेतु ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25 प्रतिशत + टेबूकोनाजोल 25 प्रतिशत (पूर्व मिश्रित) का 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
2. तिल में मैक्रोफोमिना तना व जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतु ट्राइकोडर्मा विरिडी + स्यूडोमोनास फ्लोरोसेंस 10 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीजोपचार व बुवाई के समय प्रत्येक की 2.5 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मृदा अनुप्रयोग व 250 किलोग्राम नीम की खली का प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
3. तिल में समन्वित कीट प्रबन्धन हेतु ईमिडाक्लोप्रिड 600 एफ.एस. का बीजोपचार (5 ग्राम प्रति किग्रा) व 3 अनुपात 3 में मूँग के साथ अन्तराफसल बुवाई तथा खड़ी फसल में बुवाई के 30 दिन बाद प्रोफेनोफॉस 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करना लाभप्रद पाया गया।
4. तिल की फसल में मोयला नियंत्रण के लिए वर्टीसिलियम लेकानी 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
5. तिल में 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर दर से जिंक सल्फेट (हेप्टाहाइड्रेट) व फेरस सल्फेट का बुवाई के समय मृदा अनुप्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
6. तिल की फसल में अजैविक तनाव (अत्यन्त तापमान व नमी अभाव) की दशा में पौधों में प्रबलता व उपज बढ़ोतरी हेतु 100 मिलीग्राम प्रति लीटर की दर से सैलीसिलिक अम्ल का पर्णीय छिड़काव 30 दिन की अवस्था पर करना प्रभावी पाया गया।



मूँगफली

1. मूँगफली में विस्तारी किस्मों की बीजदर 125 किग्रा प्रति हेक्टर व अविस्तारी किस्मों की बीजदर 150 किग्रा प्रति हेक्टर उपयुक्त पायी गई।
2. मूँगफली में खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमेथालिन 30 ईसी + इमेजाथापर 2 ईसी (पूर्व मिश्रित) का 750 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के तुरन्त बाद (प्री-ईमरजेन्स) अथवा खड़ी फसल में सोडियम एसीफ्लूरफेन 16.5 प्रतिशत + क्लोडिनाफॉप प्रोपार्जिल 8 प्रतिशत ईसी (पूर्व मिश्रित) का 180 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 15–20 दिनों की अवस्था पर छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
3. मूँगफली में सफेद लट के नियंत्रण हेतु मानसून की पहली वर्षा के 21 दिनों के भीतर ईमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस. एल. की 300 मिलीग्राम मात्रा प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी के साथ भुरककर सिंचाई करें।



मोठ

1. मोठ में सूखा जड़ गलन रोग से बचाव हेतु बीज को थाइरम 37.5 प्रतिशत + कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत (तैयार मिश्रण) का 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाव से उपचारित करके बोयें।





मूंग

- मूंग में खरपतवारों का प्रबंधन करने के लिए सोडियम ऐक्सीफ्लोरफेन 16.5 प्रतिशत + क्लोडिनाफॉप प्रोपार्जिल 8 प्रतिशत का 187.5 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के 15–20 दिनों बाद छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- मूंग की बीज उपज में वृद्धि हेतु फूल आने की अवस्था पर एन.पी.के. (18:18:18) का 2 प्रतिशत घोल, यूरिया के 2 प्रतिशत घोल व सेलिसिलिक अम्ल का 75 पीपीएम व जीए 3 का 30 पीपीएम घोल का पर्णीय छिड़काव करना लाभप्रद पाया गया।
- मूंग में एल.एन.एम. 16 (लुधियाना पोषक तत्व विलेयक 16) जो कि एक ऐसे जीवाणुओं का समूह है जिससे बीजोपचार कर बुवाई करने से भूमि में मौजूद विभिन्न पोषक तत्वों की घुलनशील अवस्था में बढ़ोतरी करता है, इसके प्रयोग फलस्वरूप फसल का अधिक उत्पादन होता है।
- मूंग में समन्वित रोग प्रबन्धन हेतु नीम की खली 250 किलों प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा प्रयोग + ट्राईकोडर्मा विरिडी (5 ग्राम प्रति किलो) व स्युडोमोनास फ्लुओरेसेंस (5 ग्राम प्रति किलो) से बीजोपचार तथा खड़ी फसल में पायराकलोस्ट्रोबिन 13.3 ग्राम प्रति लीटर + एपोक्सीकॉनाजोल 50 ग्राम प्रति लीटर से बने मिश्रण का 1.5 मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- मूंग में रस चूसक कीड़ों की रोकथाम हेतु वर्टीसिलियम लेकानी का 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- मूंग में कीट की संख्या को कम करने में नीम की खली 150 किलों प्रति हैक्टेयर + 10 प्रतिशत की दर से नीम के पत्तों के रस का छिड़काव + 15 प्रतिशत ताजा गौ—मूत्र के घोल का छिड़काव लाभप्रद रहता है।



ग्वार

- ग्वारफली (सब्जी हेतु) की अधिक उपज हेतु जीए 3 का 100 पीपीएम व एनएए का 200 पीपीएम घोल का पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- ग्वार में सूखा जड़ गलन रोग से बचाव हेतु ट्राईकोडर्मा विरिडी ढाई किलोग्राम को प्रति 100 किलोग्राम गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई पूर्व भूमि उपचार करें।
- ग्वार की फसल में मोयला नियंत्रण के लिए वर्टीसिलियम लेकानी 10 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पर्णीय छिड़काव करें।

बाजरा

- बाजरा में 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से जिंक सल्फेट (हेप्टाहाइड्रेट) का बुवाई के समय मृदा अनुप्रयोग करना व फेरस सल्फेट का 0.5 प्रतिशत की दर से खड़ी फसल में 30 व 45 दिनों की अवस्था पर पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।



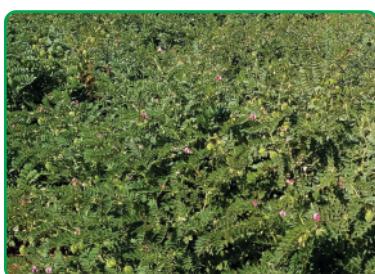


मैथी

- नागौरी मैथी के लिए 75 किग्रा प्रति हेक्टर की दर से बीज की बुवाई उपयुक्त पायी गई।
- मैथी की जैविक खेती के लिए रोग नियंत्रण के लिए ट्राईकोडर्मा विरिडि 4 ग्रा. प्रति किग्रा. की दर से बीजोपचार तथा ट्राईकोडर्मा विरिडि 2.5 किग्रा. प्रति हेक्टर की दर से मृदा में अनुप्रयोग और 60 दिनों की फसल अवस्था पर 5 प्रतिशत निम्बोली के अर्क (एन.एस.के.ई.) का पर्णीय छिड़काव और 70 व 85 दिनों की फसल अवस्था पर 1.5 प्रतिशत नीम तेल का पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- मैथी में चुर्निल आसिता के नियंत्रण के लिए ट्राईकोड्रमा विरिडि 4 ग्राम प्रति किलो की दर से बीज उपचार + ट्राईकोडर्मा विरिडि का 2.5 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा उपचार + बुवाई के 60 दिन पश्चात नीम के बीज के रस का 5 प्रतिशत घोल का छिड़काव व बुवाई के 70 एवं 85 दिन पश्चात निम्बीसिडिन के 1000 पी.पी.एम.का घोल (01 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- मैथी में समन्वित रोग नियंत्रण हेतु कार्बोक्सीन 37.5 प्रतिशत + थायरम 37.5 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति किग्रा) का बीजोपचार तथा ट्राईकोडर्मा विरिडि (2 किग्रा प्रति हेक्टर) का मृदा प्रयोग व केप्टान 70 प्रतिशत + हेक्साकोनाजोल 5 प्रतिशत का 1 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना उपयुक्त पाया गया।



चना

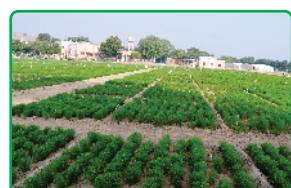
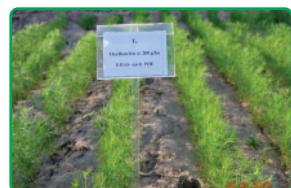


- चने में खरपतवार नियंत्रण हेतु पेन्डीमेथालिन 30 ई.सी. का 750 ग्राम अथवा मेटालाक्लोर 50 ईसी का 1000 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
- चने में अधिक उपज हेतु 2 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रति हैक्टेयर + वर्मी वाश 10 : 20 अनुपात में 40 व 60 दिन पर छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- चने में फली छेदक कीट नियंत्रण हेतु फ्लुबेन्डामाइड 20 प्रतिशत डब्ल्यू. जी. का 250 ग्राम प्रति हेक्टर अथवा इमामेक्टीन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एसजी का 220 ग्राम प्रति हेक्टर की दर से प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
- चने में फली छेदक के प्रबंध के लिए बुवाई के 70, 80 एवं 100 दिन पश्चात नीम के पत्तों के रस का 50 प्रतिशत की दर से छिड़काव, प्रभावी पाया गया।
- चने में अधिक उपज हेतु बायो एजेंट बायेरिया बेसियाना ($1 \text{ गुना } 10^8 \text{ स्पोर्स}$) का 7.5 ग्राम प्रति लीटर का 45 व 60 दिन पर छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।



जीरा

- जीरे की फसल में जोखिम कम करने हेतु जीरे व इसबगोल को 4 अनुपात 4 में अंतःशस्य के रूप में बुवाई करना अधिक लाभप्रद पाया गया।
- जीरे में प्लावन विधि से सिंचाई के साथ शत प्रतिशत अनुशंसित उर्वरकों की खुराक देने की तुलना में फर्टिगेशन विधि से आई.डब्ल्यू./सी.पी.ई.अनुपात 0.6 पर बूंद-बूंद सिंचाई के साथ 80 प्रतिशत अनुशंसित उर्वरकों की खुराक देना प्रभावी पाया गया।
- जीरे की फसल में अधिक उत्पादन हेतु बुवाई के समय सूक्ष्म दाने (माइक्रोग्रेन्यूल्स) के रूप में सल्फर 67 प्रतिशत डब्ल्यू जी + 14 प्रतिशत जिंक (पूर्व मिश्रित) का 10 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा में अनुप्रयोग तथा बुवाई के 25–30 दिन बाद खड़ी फसल में सल्फर 90 प्रतिशत डब्ल्यू जी का 7.5 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा पर शीर्ष भुरकाव करना प्रभावी पाया गया।
- जीरे में याजी खरपतवार की रोकथाम हेतु ऑक्सीफ्लोरफेन 200 ग्राम प्रति हैक्टेयर का बुवाई के आठ दिन पश्चात प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
- जीरे की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु पैंडामैथालिन 38.7 सी.एस. का 677 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- जीरे में खरपतवार प्रबन्धन के लिये पूर्व उद्भव के रूप में पैंडामिथालीन 600 ग्राम सक्रिय तत्व व ऑक्सीफ्लोरफेन 55 ग्राम सक्रिय तत्व हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- जीरे में समन्वित कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु हेक्जाकोनाजोल 5 ईसी 1 मिली प्रति लीटर के तीन छिड़काव व थायामेथाक्सम 25 डब्ल्यूजी (0.0084 प्रतिशत) के दो छिड़काव करना प्रभावी रहता है।
- जीरे में ब्लाइट के रोकथाम के लिये टेबुकोनाजॉल 25 प्रतिशत डब्ल्यू जी का 500 ग्राम प्रति हैक्टेयर अथवा पायराक्लोस्ट्रोबिन 133 ग्राम प्रति लीटर + एपोक्सीकॉनाजोल 50 ग्राम प्रति लीटर का 750 ग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।



राया



- राया की फसल में बुवाई के समय 10 किग्रा सूक्ष्म दाने के रूप में (माइक्रोग्रेन्यूल्स) सल्फर 67 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. + 14 प्रतिशत जिंक (पूर्व मिश्रित) तथा बुवाई के 25–30 दिन बाद खड़ी फसल में 7.5 किग्रा सल्फर 90 प्रतिशत डब्ल्यू डी जी प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा पर शीर्ष भुरकाव करना प्रभावी पाया गया।
- सरसों की जैविक खेती में हर्बल कीटनाशी 7 पती काढ़ा की एक लीटर मात्रा 6 लीटर पानी में सरसों के अंकुरण होते ही तथा इसके 15 दिन बाद छिड़काव दोहराने पर मोयले की संख्या कम पायी गई व उपज अधिक प्राप्त हुई।
- सरसों में मोयला नियंत्रण हेतु बायो एजेंट वर्टीसिलियम लेकानी (1×10^8 स्पोर्स) का 5.0 ग्राम प्रति लीटर का सरसों के उगते ही तथा इसके 15 दिन बाद छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।



ईसबगोल

1. ईसबगोल में खरपतवार प्रबंधन के लिये 30 ग्राम सल्फोसल्फयूरोन सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
2. ईसबगोल में समन्वित रोग नियंत्रण हेतु ट्राईकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति किग्रा का बीजोपचार तथा 2.5 किग्रा ट्राईकोडर्मा व 250 किग्रा नीम की खली का प्रति हेक्टेयर की दर से मृदा प्रयोग व अजोसीस्ट्रोबिन 500 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना उपयुक्त पाया गया।
3. ईसबगोल में मोयला नियंत्रण हेतु बायो-एजेंट वर्टीसिलियम लेकानी ($1 \text{ गुना } 10^8 \text{ स्पोर्स}$) का 5.0 ग्राम प्रति लीटर का ईसबगोल के उगते ही तथा इसके 15 दिन बाद छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।



समन्वित कीट व रोग नियंत्रण

1. प्रमुख रबी फसलों में जड़ गलन व उकटा रोगों के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडर्मा व स्युडोमोनास प्रत्येक की 3 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हैक्टर के हिसाब से 100 किग्रा. गोबर की खाद में अथवा प्रत्येक की 5 किलोग्राम मात्रा प्रति हैक्टर के हिसाब से 100 कि.ग्रा. वर्मिकम्पोस्ट में मिलाकर प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
2. प्रमुख रबी कीटों जैसे सैनिक कीट, पाईरिला, चना फली छेदक व झिंगूर के नियंत्रण हेतु क्युनालफॉस 1.5 डीपी का 25 किग्रा. प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना प्रभावी पाया गया।
3. राया, ईसबगोल व जीरे की फसल में मोयला नियंत्रण के लिए वर्टीसिलियम लेकानी का 5 ग्रा प्रति लीटर की दर से पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

जई

1. जई में चारा उत्पादन बढ़ाने के लिये अनुशंसित नाइट्रोजन खुराक का 75 प्रतिशत व बुवाई के 45 दिन पर यूरिया (2 प्रतिशत) का छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।

चिया

1. चिया (साल्विया हिस्पैनिका) की बुवाई का उचित समय अक्टुबर का प्रथम पखवाड़ा व पादप ज्यामिति 30 सेमी \times 10 सेमी उपयुक्त पायी गई।



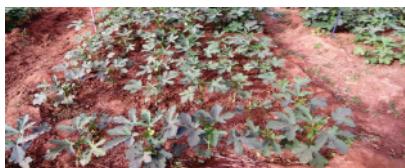
बकरी पालन

1. ब्यातकाल में बकरी से अधिक दुग्ध प्राप्त करने हेतु सामान्य राशन की अपेक्षा 150 ग्राम प्रोटीन प्रतिदिन (20 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोटीन) वाला राशन दें।



उद्यानिकी

- बेर में कटाई-छटाई (प्रुनिंग) का उत्तम समय 15 जून पाया गया जिससे फलों की अधिक उपज व गुणवत्ता प्राप्त की गयी।
- भिंडी में अधिक उपज हेतु जीए 3 का 200 पीपीएम व एनएए का 100 पीपीएम घोल का पर्णीय छिड़काव करें।
- चंवला फली (सब्जी हेतु) की अधिक उपज हेतु जीए 3 का 200 पीपीएम व एनएए का 50 पीपीएम घोल का पर्णीय छिड़काव करना प्रभावी पाया गया।
- अनार के बागान में जड़गांठ सूत्रकृमि के नियंत्रण हेतु पत्ते झाड़ने के 1-2 दिन पश्चात फ्लूओपायरम 400 एस. सी. की 625 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से मृदा ड्रेंचिंग विधि द्वारा प्रयोग करें तथा पहले उपचार के 45 दिन पश्चात पुनः 625 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से दूसरा उपचार करें।



जैविक खेती

- ◆ **मिर्च की जैविक खेती :** नरसरी में बीजोपचार ट्राईकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति किंग्रा व पी.एस.बी. एवं एजोटोबेक्टर का प्रयोग करें तथा 40 मेश के नायलोन नेट में उगावें। पौध को ट्राईकोडर्मा विरिडी + एजाडिरेक्टीन (0.3 प्रतिशत) के घोल में डुबो कर रोपण करें। मृदा में नीम की खल (1.5 टन प्रति हैक्टेयर) + गोबर की खाद 14 टन या केंचुआ खाद 7 टन प्रति हैक्टेयर देवें। कीट एवं रोग प्रबन्धन हेतु फेरोमोन ट्रेप लगावें। पहला छिड़काव गोमूत्र (100 मिली / ली.) + नीम तेल 10 मिली. प्रति लीटर, दूसरा छिड़काव गोमूत्र + लहसुन अर्क (2 प्रतिशत) + गौशाला कीट नियन्त्रक (30 मिली / ली.), तीसरा छिड़काव गोमूत्र + लहसुन अर्क + एजाडिरेक्टीन (3 मिली. / लीटर) व चौथा छिड़काव गोमूत्र, लहसुन अर्क + एजाडिरेक्टीन का 15 दिन के अन्तराल पर करें या पहला छिड़काव पौध अर्क (तूम्बा + धतूरा + खींफ + नीम), दूसरा छिड़काव स्पीनोसेड 4.5 एसी (0.2 ली. प्रति हैक्टेयर) व तीसरा छिड़काव विलायति बबूल (प्रोसेप्स जुलिफलोरा) के पत्ती अर्क का करें।
- ◆ **जीरा की जैविक खेती :** बीजोपचार के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलोग्राम तथा एजोटोबेक्टर व पी.एस.बी. 600 ग्राम प्रति हैक्टेयर काम में लेवें। ट्राइकोडर्मा विरिडी 2.5 किंग्रा को 100 किंग्रा गोबर की खाद के साथ मिलाकर प्रति हैक्टेयर भूमि उपचार करें। तूम्बा की खल 1.5 टन व 3 टन गोबर की खाद तथा 3 टन सरसों की कम्पोस्ट के साथ 250 किंग्रा जिप्सम प्रति हैक्टेयर मृदा में देवें। कीट एवं रोग प्रबन्धन हेतु 12 पीले चिपचिपे ट्रेप प्रति हैक्टेयर की दर से लगावें। प्रथम छिड़काव 2 प्रतिशत लहसुन का, दूसरा छिड़काव गौ मूत्र (100 मिली प्रति लीटर) व तीसरा छिड़काव एजीडीराक्टीन (0.03 प्रतिशत) मोयला नियन्त्रण के लिए करें अथवा तीन पर्णीय छिड़काव—गौ मूत्र (10 प्रतिशत) + एन.एस.के.ई (2.5 प्रतिशत) + लहसुन अर्क (2 प्रतिशत) का बराबर मात्रा काम में लेवें।
- ◆ **ईसबगोल की जैविक खेती :** बीजोपचार के लिए सूखी (नीम + धतूरा) पत्ती का पाउडर 10 ग्राम / किंग्रा बीज तथा पी.एस.बी. व एजोटोबेक्टर प्रत्येक 6 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज काम में लेवें। सड़ी गोबर की खाद 6 टन या सड़ी देशी खाद 3 टन + राया फसल के अपघटित अवशेष 3 टन प्रत्येक प्रति हैक्टेयर मृदा में देवें। कीट एवं रोग प्रबन्धन हेतु 12 पीले चिपचिपे पाश प्रति हैक्टेयर की दर से लगावें। मृदा में बेवेरिया बेसीयाना (5 किंग्रा प्रति हैक्टेयर) और पर्णीय छिड़काव के रूप में नीम पत्ती अर्क + धतूरा (1.0 प्रतिशत), गोमूत्र (1.0 प्रतिशत) का प्रयोग में लेवें।
- ◆ **मूंग की जैविक खेती :** इसमें जीवामृत 500 ली. / हेक्टर व गोमूत्र 4% का प्रयोग करना लाभदायक रहता है।



नई फसलों पर अनुसंधान



क्षमतावान फसलें

विश्वविद्यालय ने नई क्षमतावान फसलों जैसे चिया, विवनोआ, कैमोमाइल, चिकोरी, ड्रेगन फ्रूट आदि पर शोध कार्य शुरू किया है। इन फसलों की संकुल कृषि विधियाँ व सर्वोत्तम प्रभेदों को चयनित कर इस क्षेत्र में उपयुक्त किस्मों को विकसित किया जा रहा है।



चिया



विवनोआ
कैमोमाइल चाय एवं चिकोरी (कॉफी) फसलें



ड्रैगन फ्रूट

विश्वविद्यालय ने मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने के लिए कैमोमाइल चाय और चिकोरी (कासनी) कॉफी पर शोध कार्य शुरू किया है।



चिकोरी (कॉफी) एवं कैमोमाइल फसलें

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों के उन्नत जीनप्रारूप

सरसों

टी एम 108-1 : भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र व कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के संयुक्त प्रयासों से विकसित इस उन्नत जीन प्रारूप का राजस्थान के जोन 1ए व 2बी में में पिछले पांच वर्षों से परीक्षण किया जा रहा है।

औसत उपज : 18–20 किंवटल / है।

पकाव अवधि : 120–125 दिन

तेल की मात्रा : 39–40 प्रतिशत

हजार दानों का वजन (औसत) : 5.16 ग्राम



टी एम 267-3 : यह उन्नत जीन प्रारूप भी भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र व कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के संयुक्त प्रयासों से विकसित किया गया है। राजस्थान के जोन 1ए व 2बी में पिछले पांच वर्षों से इसका परीक्षण किया गया।

औसत उपज : 18–20 किंवटल / है।

पकाव अवधि : 120–125 दिन

तेल की मात्रा : 39–39.5 प्रतिशत

हजार दानों का वजन (औसत) : 5.37 ग्राम





पीली सरसों— आर.एम.वाई.एस. १ : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा विकसित पीली सरसों का यह बाई लोक्युलर उन्नत जीन प्रारूप है। राजस्थान की परिस्थितियों में यह जीन प्रारूप अच्छी उपज देता है।

औसत उपज : 18–20 किंवटल / है।

पकाव अवधि : 125–130 दिन

हजार दानों का वजन (औसत) : 5.38 ग्राम



आर.एम.वाई.एस. २ : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा विकसित पीली सरसों का यह टेट्रा लोक्युलर उन्नत जीन प्रारूप है। वर्ष 2020–21 में अखिल भारतीय समन्वित सरसों अनुसंधान परियोजना के तहत यह जीन प्रारूप राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभिक उपज परीक्षण में प्रथम स्थान पर रहा।

औसत उपज : 18–19 किंवटल / है।

पकाव अवधि : 115–120 दिन

हजार दानों का वजन (औसत) : 4.43 ग्राम



चिया— जे.सी.एस. १ : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा विकसित चिया का यह उन्नत जीन प्रारूप है जिसका पिछले चार वर्षों से राजस्थान के ज़ोन 1 ए व 2 बी में परीक्षण किया जा रहा है।

औसत उपज : 7–8 किंवटल / है।

पकाव अवधि : 128–134 दिन

10 मिली बीज आयतन का वजन : 7.06 ग्राम



असालिया— एम.ए.एस. १२ : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा विकसित असालिया का यह उन्नत जीन प्रारूप है।

औसत उपज 12–13 किंवटल / है।

पकाव अवधि 115–120 दिन है।



राजगिरा— आर.एम.ए. ६२ : राजगिरा का यह उन्नत जीन प्रारूप है जो वर्ष 2019–20 में अखिल भारतीय समन्वित क्षमतावान फसल अनुसंधान तंत्र परियोजना के तहत राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभिक उपज परीक्षण में प्रथम स्थान पर रहा।

औसत उपज : 11–13 किंवटल / है, पकाव अवधि : 125–135 दिन,

10 मिली बीज आयतन का वजन : 6.84 ग्राम



अरण्डी — एम.एच.सी. २

- ◆ पकाव की अवधि : 210 दिन
- ◆ औसत उपज : 37–38 किंव. / हैक्टेयर (सिंचित)
- ◆ उखटा व जड़ गलन रोग के प्रति रोधी
- ◆ हरा तेला के प्रति सहनशील



एम.एच.सी. ४

- ◆ पकाव की अवधि : 190–210 दिन
- ◆ औसत उपज : 38–39 किंव. / हैक्टेयर (सिंचित)
- ◆ उखटा रोग के प्रति सहनशील व जड़ गलन रोग के प्रति रोधी
- ◆ हरा तेला के प्रति सहनशील



एम.एच.सी. २

एम.एच.सी. ४



बीजीय मसालों पर केन्द्रीय वित्तपोषित परियोजना

सुपारी एवं मसाला विकास निदेशालय (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार) कालीकट, केरल द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित योजना, जो कि केन्द्रीय प्रायोजित योजना-मिशन फॉर इन्टीग्रेटेड होर्टिकल्चर डिवल्पमेन्ट के अंतर्गत कृषि अनुसंधान केन्द्र, मण्डोर-जोधपुर पर संचालित की जा रही है। इस योजना के उद्देश्य निम्नानुसार हैं:-

- ◆ बीजीय मसालों का उन्नत बीज उत्पादन तथा वितरण।
- ◆ बीज विधायन तथा भण्डारण हेतु बुनियादी ढाँचा विकसित करना।
- ◆ अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों द्वारा प्रौद्योगिकी का प्रसार-प्रचार।
- ◆ प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमीनार, कार्यशाला तथा किसान गोष्ठी इत्यादि का आयोजन कर उन्नत तकनीकी का प्रचार-प्रसार करना।

उक्त उद्देश्यों के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा बीजीय मसालों पर कार्य किया जा रहा है। परियोजना के तहत पिछले पांच वर्षों के दौरान कुल 245 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (145 जीरा + 100 मैथी) का आयोजन किया गया। प्रदर्शित की गई उन्नत तकनीकी में लाइन बुगाई विधि, किस्म (जीरा: जीसी -4 और मैथी: आरएमटी -305), बीज उपचार, खरपतवार प्रबंधन एवं पौधों की सुरक्षा के उपाय शामिल थे।



जीरा व मैथी के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

- ◆ योजना के अंतर्गत उच्च गुणवत्तायुक्त बीजीय मसालों का लगभग 550 विंचटल बीजों का उत्पादन विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों पर किया गया।



- ♦ मसाला फसलों के बारे में नवीनतम तकनीकों से किसानों तक पहुँचाने के लिए, कुल 15 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें कुल 1474 किसानों ने भाग लिया। इन प्रशिक्षणों के साथ-साथ एक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी और दो जिला स्तरीय संगोष्ठियां भी आयोजित की गई, जिनसे विभिन्न कृषि संस्थानों के कुल 471 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।



जिला स्तरीय संगोष्ठियाँ का आयोजित

- ♦ मसाला बीजों की गुणवत्ता हेतु कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के विभिन्न केंद्रों पर बुनियादी ढांचे जैसे बीज प्रसंस्करण इकाई, थ्रेसिंग फ्लोर निर्माण और बीज गोदाम विकसित किए गए हैं।



कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही में थ्रेसिंग फ्लोर



कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, सुमेरपुर में बीज प्रसंस्करण इकाई

कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र, समदड़ी में मसाला बीज भंडारण संरचना



बीज उत्पादन

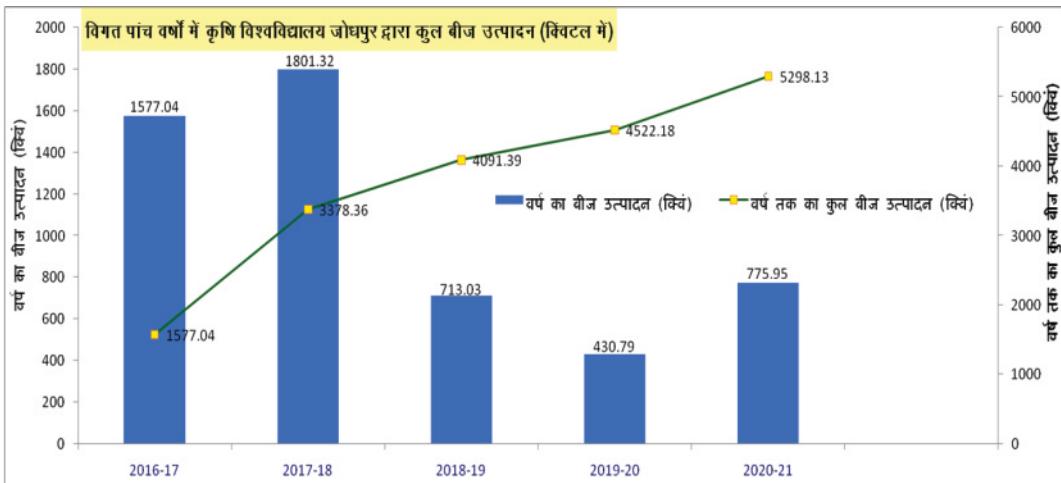
बीज निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों/संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्रों पर खरीफ, रबी व जायद में विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के प्रजनक, आधार बीज व सत्यापित बीज के उत्पादन से विधायन तक के कार्य की देखरेख करता है। साथ ही जहाँ आवश्यकता हो वहाँ पर विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों के आधार बीज व प्रमाणित बीज उत्पादन कार्य की देखरेख भी करता है। विश्वविद्यालय में उत्पादित उन्नत बीज (प्रजनक / आधार बीज) अन्य बीज उत्पादन संस्थानों जैसे राजस्थान राज्य बीज निगम, राष्ट्रीय बीज निगम तथा निजी बीज उत्पादन करने वाली कम्पनियों को उपलब्ध करवाता है तथा साथ ही अनुसंधान संस्थान व कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से राज्य के किसानों को ट्र्यूथफुल लेबल्ड (TFL) बीज उपलब्ध करवाने का कार्य भी करता है। विश्वविद्यालय की वर्ष 2016–17 से 2020–21 तक बीज उत्पादन का विवरण निम्नानुसार है—

प्रजनक बीज उत्पादन (किंवटल में)

फसल	2016	2017	2018	2019	2020	कुल
तिल	3.46	2.5	48.11	1.6	4.66	60.33
बाजरा	—	8.85	40.56	2.03	—	51.44
कुल	3.46	11.35	88.67	3.66	4.66	111.77

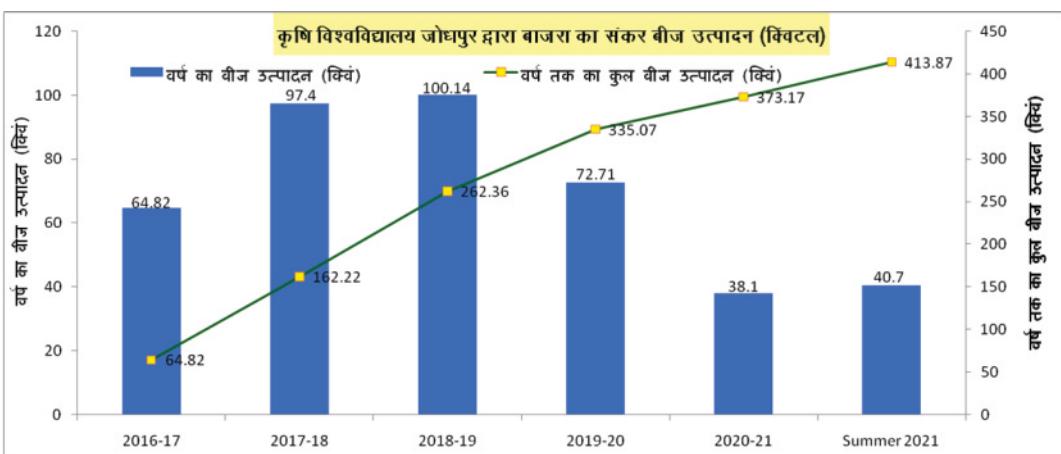
सत्यापित / ट्र्यूथफुल लेबल्ड बीज उत्पादन (किंवटल में)

खरीफ फसल	2016	2017	2018	2019	2020	कुल
मोठ	69.76	53.05	3.29	18.36	5.0	149.46
मूँग	800.01	934.72	369.16	216.68	408.71	2729.28
ग्वार	94.06	26.16	3.90	54.01	49.0	227.13
तिल	5.28	22.79	—	18.48	27.79	74.34
बाजरा	—	7.61	—	—	2.7	10.31
कुल	969.11	1044.33	376.35	307.53	493.2	3190.52
रबी फसल	2016	2017	2018	2019	2020	कुल
जीरा	50.59	64.33	51.12	—	86.82	252.86
ईसबगोल	17.23	8.0	8.59	3.4	17.55	54.77
मिर्च	5.16	1.0	—	—	—	6.16
गेहूँ	242.99	68.31	70.94	47.4	42.0	471.64
तारामीरा	—	—	—	—	15.66	15.66
मैथी	25.54	48.08	3.56	33.0	52.2	162.38
चना	57.10	514.43	73.3	—	14.0	658.83
राया	185.94	19.78	32.98	35.83	41.86	316.39
सौंफ	—	3.4	5.07	—	8.0	16.47
सुआ	—	—	2.45	—	—	2.45
मटर	—	18.31	—	—	—	18.31
धनियाँ	19.92	—	—	—	—	19.92
कुल	604.47	745.64	248.01	119.63	278.09	1995.84
कुल योग	1573.58	1789.97	624.36	427.16	771.29	5186.36



बाजरा का संकर बीज उत्पादन

राजस्थान राज्य में बाजरा की फसल के तहत लगभग 45 लाख हेक्टेयर क्षेत्र है। इसकी बुवाई के लिए लगभग 18000 मैट्रिक टन बीज की आवश्यकता होती है। बीज की लगभग सभी मात्रा राज्य के बाहर से आती है और इसके लिए लगभग 300 करोड़ रुपये राज्य को खर्च करने पड़ते हैं। राज्य में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर ने संकर बाजरा के बीज उत्पादन में पहल की ओर पिछले पांच वर्षों के दौरान एमपीएमएच 17 संकर बाजरा का 414 विंवटल बीज का उत्पादन किया।





विभिन्न संस्थाओं के साथ एम.ओ.यू.

- ◆ मानव—संसाधनों को विकसित करने के लिए 5 साल की अवधि के लिए 14 फरवरी, 2020 को इंटरनेशनल क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी—एरिड ट्रॉपिक्स (ICRISAT), पाटनचेरू (तेलंगाना) और कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के मध्य एम.ओ.यू. किया गया। इसके अन्तर्गत कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में सतत विकास के लिए उपयुक्त, कुशल और प्रभावी हस्तांतरणीय प्रौद्योगिकी उत्पन्न करना, परिचमी राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में खाद्य और पोषण सुरक्षा, आय सृजन और पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित करने इत्यादि महत्त्वपूर्ण विषयों पर कार्य किये जा सकेंगे।
- ◆ कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में छात्रों को प्रशिक्षण और स्नातकोत्तर अनुसंधान की सुविधा के लिए कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद—राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली –110012 के बीच 1 फरवरी, 2019 को एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ जनवरी 2019 में कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद—सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के मध्य छात्रों के प्रशिक्षण और कृषि व संबद्ध क्षेत्रों में स्नातकोत्तर अनुसंधान की सुविधा के लिए तीन साल की अवधि के लिए एम.ओ.यू. किया गया जो 5 वर्षों तक विस्तार योग्य होगा।
- ◆ कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में स्नातकोत्तर अनुसंधान व छात्रों के प्रशिक्षण की सुविधा के लिए कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद—केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर के मध्य 3 वर्ष की अवधि (29.01.2019 से 28.01.2022) के लिए 29 जनवरी, 2019 को एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ कृषि में ट्रॉन्म्बे फसल जीनोटाइप और अनुसंधान गतिविधियों के प्रक्षेत्र मूल्यांकन पर सहयोगात्मक अनुसंधान और विकास कार्यक्रम के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC), ट्रॉन्म्बे, मुंबई और कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान) के मध्य 5 वर्षों की अवधि के लिए 26 जुलाई 2018 को एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ किर्कहाउस ट्रस्ट, यूनिट 6 फेनलॉक कोर्ट ब्लेनहेम ऑफिस पार्क, लॉना हनबोरो, ऑक्सफोर्डशायर, OX29 8LN और कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के मध्य मई 2018 में 1 वर्ष की अवधि (19 जून से 31 मई, 2020) के लिए 'उप—सहारा अफ्रीका में शुष्क भूमि खेती प्रणालियों के लिए तनाव सहिष्णु यतीम (Orphan) दालों का मूल्यांकन और रणनीतिक सहयोग के लिए भारत—अफ्रीका फ्रेमवर्क को बढ़ावा देने' के लिए परियोजना पर एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण—जीईएफ द्वारा वित्त पोषित "कृषि क्षेत्रों में कृषि जैव विविधता संरक्षण एवं उपयोग व पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को सुनिश्चित करने तथा स्थानीय भूमि नस्लों के संरक्षण के लिए बुनियादी उद्देश्यों के साथ भेद्यता को कम करने और इसे किसानों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए की परियोजना के लिए कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर और बायोवर्सिटी इंटरनेशनल के बीच 1 सितंबर, 2018 से 31 दिसंबर, 2020 तक के लिए एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर और महाराणा प्रताप कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के मध्य 5 साल की अवधि के लिए कृषि के क्षेत्र में विद्या वाचश्पति और स्नातकोत्तर उपाधि / पाठ्यक्रम एवं अनुसंधान के लिए 9 जुलाई, 2018 को एम.ओ.यू. किया गया।
- ◆ कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के बीच विचारों के आदान—प्रदान, अनुसंधान और शिक्षा के लिए सुविधाओं की पारस्परिक सहयोग, संकाय की गतिशीलता व किसानों और छात्रों के बीच आयुर्वेद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 8 जून, 2020 को एम.ओ.यू. किया गया।



विश्वविद्यालय द्वारा विकसित लोकप्रिय किस्मों के बीजेत्पादन हेतु निम्नलिखित कम्पनियों के साथ एम.ओ.यू.

क्र.सं.	कम्पनी का नाम	किस्म का नाम	समझौता दिनांक
1.	Wellnext Seeds (India) Pvt. Ltd., New Delhi	MPMH 17	15.07.2017
2.	Shri Sai Sadguru Seeds, Hyderabad	MPMH 17	11.01.2018
3.	Sri Laxmi Venkateswara Seeds, Kurnool, A. P.	MPMH 21	09.08.2018
4.	Sampoorna Seeds, Adoni, A.P.	MPMH 21	22.10.2018
5.	Dhartipura Beej Company Paota 'C' Jodhpur	MPMH 17	07.02.2019
6.	Manak Hybrid Seed Company, RIICO Industrial Area, Jodhpur	MPMH 17	22.07.2019
7.	Classic Hybrid Seed Pvt. Ltd, Ahmedabad	MPMH 17 & RT 351	26.02.2021
8.	Sri Laxmi Venkateswara Seeds, Kurnool, A. P.	MPMH-17	22.08.2021



फसलों की किस्मों के बीज उत्पादन हेतु विभिन्न संस्थाओं के साथ एम.ओ.यू.





प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की एक नोडल एजेंसी है जो राज्य में विशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान में कृषि प्रशिक्षण, कृषि परामर्श, कृषि परीक्षण, प्रदर्शन और सूचना सेवाओं सहित पेशेवर विस्तार सेवाओं के माध्यम से इस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए अहम भूमिका निभाता है। सन् 2013 से निदेशालय द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न इकाइयों के वैज्ञानिकों की बहु-विषयक टीम के माध्यम से प्रसार सेवाएं प्रदान की जा रही है जो विभिन्न एजेंसियों के साथ निकट समन्वय में भागीदारी मोड़ में अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हैं। यह निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधिकार क्षेत्र के कृषि विज्ञान केन्द्रों के लिए दिशा निर्देश प्रदान करता है और लगातार निगरानी और प्रसार कार्यक्रमों का मूल्यांकन करता है।

प्रसार निदेशालय के तीन बुनियादी कार्य प्रशिक्षण, परामर्श और संचार हैं जिसमें प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिशद ने राज्य के प्रत्येक जिले में कृषि विज्ञान केंद्र स्थापित किए हैं, जिनमें से 6 केवीके प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। इन केवीके को किसानों व प्रसार कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करने और "ऑन" और "ऑफ" दोनों रूप में उन्नत तकनीक का प्रदर्शन करने का अधिकार दिया गया है। निदेशालय बैकस्टॉपिंग प्रदान करता है और केवीके की गतिविधियों की निगरानी करता है।

प्रमुख उद्देश्य

- ◆ स्वरोजगार और आजीविका सुरक्षा के लिए किसानों, कृषि महिलाओं, स्कूल छोड़ चुके और बेरोजगार युवाओं के लिए कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में लघु और दीर्घकालिक व्यावसायिक प्रशिक्षण का आयोजन करना।
- ◆ किसानों को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की सिद्ध प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिए अनुसंधान और प्रसार केंद्रों (केवीके और एटीआईसी) के बीच स्वस्थ संबंध बनाना और साथ ही अनुसंधान प्रणाली के लिए किसान की प्रतिक्रिया का हस्तांतरण करना।
- ◆ अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए केवीके और एटीआईसी गतिविधियों की नियमित आधार पर निगरानी और मूल्यांकन करना।
- ◆ किसानों के खेतों पर नई तकनीकों के प्रभाव को दर्शाने के लिए मुख्यालय स्तर पर और कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से कृषि प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- ◆ विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों में ऑन फार्म परीक्षण (ओएफटी) और अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों (एफएलडी) के माध्यम से नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन और शोधन करना।
- ◆ राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से राज्य के पश्चिमी भाग में सुधार के लिए सार्वजनिक और स्वैच्छिक क्षेत्र की पहल का समर्थन करने के लिए कृषि प्रौद्योगिकियों के संसाधन और ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करना।
- ◆ आईसीटी और अन्य मीडिया के साथ विशेष फार्म और घरेलू सूचना सेवाओं के माध्यम से प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण करना।



प्रमुख गतिविधियाँ

किसान मेले

प्रसार शिक्षा निदेशालय ने 05 किसान मेले का आयोजन किया है जिसमें एक पश्चिमी क्षेत्रीय किसान मेला और एक राज्य स्तरीय मेला शामिल है। इन मेलों में कुल मिलाकर 18,000 से अधिक किसानों ने भाग लिया। पश्चिमी क्षेत्रीय किसान मेला (2018) और एक राज्य स्तरीय मेला (2020) प्रसार विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया था। पश्चिमी क्षेत्रीय किसान मेला (2018) का उद्घाटन श्री सी.आर. चौधरी, राज्य मन्त्री, उपभोक्ता मामले विभाग, खाद्य और सार्वजनिक वितरण, भारत सरकार, श्री ए. आर. कोहली, मिजोरम के पूर्व राज्यपाल, श्री नारायण लाल पंचारिया, सांसद, डॉ. बलराज सिंह, कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, डॉ. ओ.पी. यादव, निदेशक, काजरी और श्री पूना राम चौधरी, जिला प्रमुख, जोधपुर द्वारा किया गया था। राज्य स्तरीय मेले (2020) का उद्घाटन श्री कैलाश चौधरी, राज्य मन्त्री, कृषि और किसान कल्याण, भारत सरकार, डॉ. ओपी यादव, निदेशक, काजरी, डॉ. गोपाल लाल, निदेशक, राश्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र (एनआरसीएसएस), अजमेर, डॉ. बी.आर. चौधरी, माननीय कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा किया गया था।

इन सभी मेलों में किसानों और कृषि महिलाओं और सरकार के अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों और स्कूली छात्रों और अन्य विभाग के अधिकारियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी स्टॉलों एवं प्रायोगिक क्षेत्र के भ्रमण के साथ ही किसानों को निःशुल्क भोजन वितरण किया गया। इन मेलों में किसान वैज्ञानिक संवाद एवं फसल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

किसान मेले (2015–16 से 2019–20)

वर्ष	दिनांक	किसान मेला	प्रायोजक	प्रतिभागियों की संख्या
2015–16	09 फरवरी, 2016	जिला स्तरीय किसान मेला	आत्मा, जोधपुर	1200
2016–17	07 फरवरी, 2017	जिला स्तरीय किसान मेला	आत्मा, जोधपुर	1000
2017–18	15 सितम्बर 2017	जिला स्तरीय किसान मेला	आत्मा, जोधपुर	7,500
	28–31 जनवरी, 2018	पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि मेला	कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	1,100
2019–20	24 फरवरी, 2020	राज्य स्तरीय किसान मेला कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़मालानी, बाड़मेर	कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	7,000



पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि मेला, दिनांक: 28–31.01.2018, रथान: कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर



बैक स्टॉपिंग प्रशिक्षण : प्रसार शिक्षा निदेशालय ने 18–19 जनवरी 2016 के दौरान वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के लिए “शुष्क फलों और औषधीय फसलों के उत्पादन और कटाई के बाद प्रबंधन में प्रगति” पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। 12 से 14 मार्च, 2020 को “बीजीय मसालाओं और शुष्क फलों के उत्पादन और कटाई के बाद के प्रबंधन में अग्रिम विशय” पर एक और बैकस्टॉपिंग प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में सभी 22 विशय विशेषज्ञों और अधिकारियों ने भाग लिया।



प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के लिए बैक स्टॉपिंग प्रशिक्षण

समन्वित कृषि प्रणाली हेतु नये मॉडल : कृषि विज्ञान केन्द्र, सिरोही पर चीकू, आम, अमरुद एवं नेपियर धास की नवीनतम किस्मों के नये मॉडल स्थापित किये गये। कृषि विज्ञान केन्द्र, गुडामालानी पर खेजूर, सहजन, सिरोही नस्ल की बकरी एवं कडकनाथ मुर्गी की नस्ल के नये मॉडल इकाईयों की स्थापना की गई। इसका प्रयोजन कृषि विज्ञान केन्द्रों पर भ्रमण करने वाले किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों से अवगत करवाया गया है।



समन्वित कृषि प्रणाली तहत मुर्गी पालन एवं एजोला मॉडल

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा कृषि विश्वविद्यालय को यह परियोजना स्वीकृत की गई जिसका संचालन जोधपुर जिले के तीन गांव बालरवा, मणाई व बिंजवाड़िया में वर्ष 2016–17 से किया जा रहा है। इस परियोजना का संचालन विभिन्न मॉड्यूल–फसल आधारित, उद्यानिकी आधारित, समन्वित कृषि प्रणाली एवं मानव संसाधन प्रबन्धन मॉड्यूल द्वारा किया जा रहा है। पिछले पाँच वर्षों में विभिन्न प्रकार की तकनीकों का प्रदर्शन फसल, बागवानी, पशुपालन एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन आधारित मॉड्यूल के तहत कुल 2200 किसानों के खेतों पर प्रदर्शन लगवाकर उनको लाभन्वित किया गया।



कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषक व कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण : मुख्यतः कृषि विज्ञान केन्द्र तीन तरह के प्रशिक्षण आयोजित करवाता है जिसमें संस्थागत, असंस्थागत एवं प्रायोजित प्रशिक्षण प्रमुख होते हैं। वर्ष 2016 से 2020 तक इन कृषि विज्ञान केन्द्रों पर कुल 1439 प्रशिक्षण करके तीनों तरह के प्रशिक्षणों से कुल 45768 किसान, कृषक महिलाएं व प्रसार कार्यकर्ता लाभान्वित किया गया। इन गतिविधि के द्वारा कृषकों व कृषक महिलाओं तथा ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण, नवीनतम कृषि तकनीकी को किसानों के खेतों पर समूह अग्र पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन, प्रक्षेत्र प्रशिक्षण के साथ साथ अन्य प्रसार गतिविधियों का आयोजन कर जिले के कृषकों को उन्नत खेती के साथ साथ अधिक लाभ प्राप्त कर कृषकों को रोजगारोन्मुखी बनाने की ओर अग्रसर करनें का कार्य किया।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर संस्थागत, असंस्थागत एवं प्रायोजित प्रशिक्षण

वर्ष	प्रशिक्षण विवरण	केशवाना (जालोर)	सिरोही	अठियासन (नागौर I)	मौलासर (नागौर II)	गुड़मालानी (बाड़मेर II)	फलौदी (जोधपुर II)	कुल
2016	प्रशिक्षण संख्या	97	72	42	34	26	25	296
	लाभार्थी संख्या	4692	4089	881	1111	377	777	11927
2017	प्रशिक्षण संख्या	102	39	46	28	19	28	262
	लाभार्थी संख्या	2582	1133	1115	494	509	765	6598
2018	प्रशिक्षण संख्या	60	45	35	20	31	17	208
	लाभार्थी संख्या	1521	1793	1133	721	898	444	6510
2019	प्रशिक्षण संख्या	56	80	49	75	47	43	350
	लाभार्थी संख्या	1581	4463	830	1543	1611	1188	11216
2020	प्रशिक्षण संख्या	63	94	46	56	27	37	327
	लाभार्थी संख्या	1785	3281	1269	1386	698	1098	9517
कुल योग	प्रशिक्षण संख्या	378	330	218	213	150	150	1439
	लाभार्थी संख्या	12161	14759	5228	5255	4093	4272	45768



कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषक व कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण



समूह अग्र पंक्ति प्रदर्शन : राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत दलहन एवं तिलहन उत्पादन व अन्य फसलों की उन्नत कृषि प्रोटोटाइपों को किसानों के खेतों तक पहुंचाने हेतु व उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा फसलों के अग्र पंक्ति प्रदर्शन खरीफ और रबी में आयोजित किये गये। प्रत्येक प्रदर्शन में नवीनतम कृषि तकनीकी—उन्नतबीज, पंक्ति बद्ध बुवाई, बीजोपचार, जिंक सल्फेट का प्रयोग, पौध संरक्षण को प्रदर्शित किया गया एवं किसानों के खेतों पर विचार गोष्ठियों का आयोजन कर इनके बारे में जानकारी दी गई। अनाज की फसलों, औषधीय फसल, बीजीय मसाले एवं सब्जियों के कुल 8595 अग्र पंक्ति प्रदर्शन कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित किये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्रों पर अग्र पंक्ति फसल प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केन्द्र	प्रदर्शनों की संख्या					
	2016	2017	2018	2019	2020	कुल योग
केशवाना (जालोर)	110	140	425	375	600	1650
सिरोही	193	225	242	475	415	1550
अठियासन (नागौर प्रथम)	172	183	140	473	360	1328
मौलासर (नागौर द्वितीय)	204	166	37	440	635	1482
गुड़मालानी (बाड़मेर द्वितीय)	145	100	95	287	591	1218
फलौदी (जोधपुर द्वितीय)	297	108	137	385	440	1367
कुल योग	1121	922	1076	2436	3041	8595



कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित समूह अग्र पंक्ति प्रदर्शन

मरुधरा कृषि पत्रिका : प्रसार शिक्षा निदेशालय, द्वारा सितम्बर, 2020 से द्वि-मासिक पत्रिका “मरुधरा कृषि” का विमोचन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. बी.आर. चौधरी द्वारा किया गया। इस पत्रिका में राज्य एवं देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से लेख आमंत्रित कर उन्हें किसानों के लिए उपलब्ध करवाया जा रहा है। नाबांड, जयपुर द्वारा इसके प्रकाशन हेतु 50,000 रुपये की वित्तीय सहायता भी इस वर्ष उपलब्ध कराई गई।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन : कृषक महिलाओं के सम्मान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र पर दिनांक 8 मार्च 2020 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में तकनीकी व्याख्यान, मेहंदी प्रतियोगिता, रंगोली आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।



गांव गोद कार्यक्रम : कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने राजभवन जयपुर से प्राप्त निर्देश पर इस अवधि के दौरान दो गांवों को स्मार्ट गांव के रूप में विकसित करने के लिए गोद लिया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्राम नेवरा रोड को जनवरी 2016 में गोद लिया गया था और जून 2018 तक कई विकास गतिविधियों को अंजाम दिया गया था। जुलाई 2018 में अंतोदय गांव लूनी को इस उद्देश्य के लिए अपनाया गया था जिसमें सफाई अभियान, स्वाइन पलू कोविड-19 और अन्य बीमारियों के बारे में जागरूकता के साथ साथ किसानों की आजीविका में सुधार के लिए जल संचयन संरचनाओं का नवीनीकरण, विचार गोष्ठी, क्षेत्र दिवस, वृक्षारोपण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, किसान-वैज्ञानिक बातचीत, मृदा स्वास्थ्य शिविर जैसे अनेक कार्यक्रमों को अंजाम दिया गया। गांव लूनी में 1.5 हेक्टेयर में एक ऑक्सीजन पार्क विकसित किया गया जिसमें यूएस आर हैड ऑफ यूनिवर्सिटी के तहत 650 विभिन्न प्रकार के ऑक्सीजन दायक वृक्षों वाली भूमि भी की तैयार राई थी।



ग्राम नेवरा रोड के किसान एवं
कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के वैज्ञानिक



विधायक श्री महेंद्र बिश्नोई, ग्राम लूनी में
ऑक्सीजन पार्क में वृक्षारोपण करते हुए

प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक : कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक नियमित रूप से आयोजित की जाती है। इन बैठकों में सभी अनिवार्य सदस्य शामिल होते हैं। इन बैठकों में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रस्तुत परियोजनाओं के साथ-साथ प्रसार शिक्षा निदेशालय की सभी गतिविधियों पर चर्चा की जाती है और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से पहले आवश्यक अनुमोदन लिया जाता है।

प्रसार शिक्षा परिषद की आयोजित बैठके

क्रम संख्या	बैठक की तिथि	माननीय कुलपति द्वारा नामित वैज्ञानिक	माननीय कुलपति द्वारा नामित किसान
1.	07.07.2016	♦ डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक, अटारी, जोधपुर ♦ डॉ. प्रतिभा तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, संभाग 6, काजरी, जोधपुर	♦ श्री विश्वराज सिंह राठौड़, ग्राम बिठिया ♦ श्री गोरद्धन राम, ग्राम नेवरा रोड ♦ श्री धर्मन्द्र ढूड़ी, ग्राम चटालिया
2.	30.07.2017	♦ डॉ. पी.एन. कल्ला, पूर्व निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय और सेवानिवृत्त प्रो. (कृषि प्रसार), एसकेआरएयू, बीकानेर ♦ डॉ. जी.एन. माथुर, सेवानिवृत्त वरिष्ठ विज्ञान एवं प्रमुख, केवीके, अजमेर	♦ श्री शैला राम सारन, ग्राम लूनी ♦ श्री चंद्रशेखर डागा, ग्राम मथानिया ♦ श्री मोहन राम, ग्राम दईकड़ा



क्रम संख्या	बैठक की तिथि	माननीय कुलपति द्वारा नामित वैज्ञानिक	माननीय कुलपति द्वारा नामित किसान
3.	16.03.2019	<ul style="list-style-type: none"> ♦ डॉ. आर्जुन माथुर, पूर्व निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय और सेवानिवृत्त प्रो. (सस्य विज्ञान) एमपीयूएटी, उदयपुर ♦ डॉ. श्योजित सिंह, सेवानिवृत्त प्रो. (सस्य विज्ञान), एमपीयूएटी, उदयपुर 	<ul style="list-style-type: none"> ♦ श्री थाना राम, ग्राम बालरवा ♦ श्री नवदीप गोलेछा, ग्राम सिरोही ♦ श्री रावता राम, ग्राम गुड़मलानी
4.	04.06.2020	<ul style="list-style-type: none"> ♦ डॉ. ए.के. पटेल, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, संभाग 4, काजरी, जोधपुर ♦ डॉ. पी.पी. रोहिल्ला, प्रधान वैज्ञानिक (पशुपालन), अटारी, जोधपुर 	<ul style="list-style-type: none"> ♦ श्री हेमेन्द्र सिंह राठौड़, ग्राम लोटोती ♦ श्री नरपत सिंह चारण, ग्राम पड़रु ♦ श्री अशोक चौधरी, ग्राम अलाय



कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में आयोजित दूसरी और चौथी प्रसार शिक्षा परिषद की बैठक

आदान विक्रेताओं (इनपुट डीलरों) के लिए कृषि प्रसार सेवाओं में डिप्लोमा : प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर कृषि आदान विक्रेताओं के लिए कृषि प्रसार सेवाओं में डिप्लोमा के लिए नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में भी कार्य करता है। यह डिप्लोमा राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज) द्वारा कार्यान्वित किया गया था। इस 48 सप्ताह के डिप्लोमा का उद्देश्य आदान विक्रेताओं के बीच कृषि में तकनीकी योग्यता का निर्माण करना और उन्हें किसानों की बेहतर सेवा करने और पैरा-एक्सटेंशन पेशेवरों के रूप में कार्य करने की सुविधा प्रदान करना है।





प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा आयोजित प्रदर्शनियाँ

क्र. सं.	स्थान	दिवस	दिनांक	प्रतिभागियों की संख्या	अतिथि का भ्रमण
1.	जयपुर	ग्राम—2016	9–11 नवम्बर 2016	15000	श्रीमति वसुंधरा राजे, माननीय मुख्यमंत्री व केबिनेट मंत्रीगण
2.	कोटा	ग्राम—2017	24–26 मई 2017	10000	श्रीमति वसुंधरा राजे, माननीय मुख्यमंत्री व केबिनेट मंत्रीगण
3.	केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	किसान मेला	23 सितंबर 2017	7000	प्रो. पी.एस. राठौड़, माननीय कुलपति एस.के.एन. एयू. जोबनेर, प्रो.जी.एल.केशवा, माननीय कुलपति कृ.वि. कोटा
4.	नागौर	किसान दिवस	23 दिसम्बर 2017	650	डॉ बलराज सिंह, माननीय कुलपति कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
5.	कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर	पश्चिमी क्षेत्रीय कृषि मेला 2018	28–31 जनवरी 2018	8000	श्री सी.आर. चौधरी, केन्द्रीय राज्यमंत्री, उपभोक्ता मामले श्री ए.आर. कोहली, पूर्व राज्यपाल मिजोरम, डॉ. महेन्द्र सिंह राठौड़ अध्यक्ष एवं राज्यमंत्री, विकास प्राधिकरण जोधपुर, श्री दिलीप जाखड़, उप-महानिदेशक आरएसी, डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक अटारी, जोधपुर
6.	कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर	राजस्थान के किसानों की आय वृद्धि के लिये प्याज और लहसुन की उत्पादन तकनीकी एवं मूल्य शृंखला प्रबंधन (एन.एच.आर.डी.एफ.)	13–14 अप्रैल 2018	800	डॉ. बिजेन्द्र सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, नई दिल्ली डॉ. एस.पी. सिंह, संयुक्त सचिव, कृषि, राजस्थान सरकार, जयपुर, डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक, अटारी, डॉ. दयाल सिंह, निदेशक, समेती जयपुर, डॉ. पी.के. गुप्ता, निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान, कोटा
7.	केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर	किसानों की आय दोगुनी करने में सहायक भेड़–बकरी एवं खरगोश कार्यशाला का आयोजन किया	29 सितंबर 2018	600	श्री राधा मोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, प्रभुलाल सैनी, कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार
8.	कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर	नियंत्रित योग्य गुणवत्ता युक्त अनार उत्पादन एवं विपणन कार्यशाला का आयोजन	3–4 अक्टूबर 2018	500	डॉ. ज्योतस्ना, राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केंद्र सोलापुर, श्री अनिल राठी, उत्पादन संघ अध्यक्ष, श्री बी.के. पाडे, सयुक्त निदेशक कृषि विस्तार, बी.के. त्रिवेदी, उपनिदेशक कृषि विस्तार
9.	केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर	राज्य स्तरीय किसान मेला	13–15 सितंबर 2018	600	श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, सांसद एवं केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार



क्र. सं.	स्थान	दिवस	दिनांक	प्रतिभागीयों की संख्या	अतिथि का भ्रमण
10.	अखिल भारतीय समन्वित बाजरा अनुसंधान परियोजना, जोधपुर	कृषक अधिकार बाजरे में डी.यू.एस. प्रशिक्षण एवं प्रक्षेत्र दिवस	23–24 सितंबर 2018	300	डॉ. जे. सी. राणा, राष्ट्रीय समन्वयक, यू०एन एन्चायरमेन्ट – जोफ परियोजना, डॉ. पी. राघव रेडी, कार्यक्रम अध्यक्ष पूर्व कुलपति, प्रोफेसर जय संकर प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद तेलंगाना
11.	केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर	राज्य स्तरीय किसान मेला	16 सितंबर 2019	2000	श्रीमान कैलाश चौधरी माननीय केन्द्रीय कृषि एवं कल्याण राज्य मंत्री भारत सरकार
12.	नान्दडा कलां	कृषि प्रदर्शनी	08 नवम्बर 2019	1000	श्रीमान् कलराज मिश्र, माननीय राज्यपाल राजस्थान



श्रीमान कैलाश चौधरी माननीय केन्द्रीय कृषि एवं कल्याण राज्य मंत्री भारत सरकार द्वारा कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की कृषि प्रदर्शनी का उदघाटन



श्रीमान् कलराज मिश्र, माननीय राज्यपाल राजस्थान के द्वारा कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन





कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर

जोधपुर - 342 304, राजस्थान

Website : aujodhpur.ac.in